गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 318
दि. 22.03.2026,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

तीन हफ्तों में बदलता युद्ध का रुख: पश्चिम एशिया में तनाव, तबाही और शांति की आहट

(जीएनएस)। वाशिंगटन/तेहरान/तेल अवीव। पश्चिम एशिया की धरती एक बार फिर युद्ध की आग में झुलसती नजर आ रही है, लेकिन इस बार हालात कुछ अलग हैं। शुरुआत में जिस आक्रामक रणनीति के साथ डोनाल्ड ट्रंप के नेतृत्व में अमेरिका और इजरायल ने ईरान पर हमले तेज किए थे, अब उसी युद्ध के तीसरे हफ्ते में थकान, दबाव और वैश्विक संकट के संकेत साफ दिखाई देने लगे हैं। इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के बाद अब ट्रंप का युद्ध समाप्ति की ओर झुकाव यह दर्शाता है कि जमीनी हकीकत रणनीतिक दावों से कहीं अधिक जटिल हो चुकी है।

28 फरवरी से शुरू हुआ यह संघर्ष देखते ही देखते एक क्षेत्रीय टकराव से वैश्विक संकट में बदल गया। शुरुआती हमलों में अमेरिका और इजरायल ने ईरान के कई सामरिक ठिकानों, सैन्य अड्डों और महत्वपूर्ण शहरों को निशाना बनाया। जवाब में ईरान ने भी अभूतपूर्व प्रतिरोध दिखाते हुए खाड़ी क्षेत्र में मौजूद अमेरिकी और सहयोगी देशों के ठिकानों पर हमले शुरू कर दिए। तीन हफ्तों के भीतर ही इस युद्ध ने हजारों जिंदगियों को निगल लिया। रिपोर्टों के अनुसार अब तक 2000 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि हजारों घायल हैं। लेबनान में हिज्बुल्लाह के खिलाफ जारी हमलों में भी भारी तबाही हुई है, जहां करीब 1000 लोगों के मारे जाने की खबर है। इस पूरे संघर्ष का सबसे बड़ा असर ऊर्जा बाजार पर पड़ा है। दुनिया की नजरें जिस जलमार्ग पर टिकी रहती हैं, वह है होर्मुज स्ट्रेट। यही वह संकरा रास्ता है, जहां से दुनिया का एक बड़ा हिस्सा तेल और गैस की आपूर्ति प्राप्त करता है। ईरान द्वारा इस जलडमरूमध्य को लगभग बंद कर देने के बाद वैश्विक ऊर्जा संकट की आशंका गहराने लगी है। केवल वे जहाज ही गुजर पा रहे हैं, जो ईरान के सहयोगी हैं या फिर इस युद्ध में निष्पक्ष बने हुए हैं। इससे तेल की कीमतों में उछाल और कई देशों की अर्थव्यवस्था पर दबाव साफ दिखाई देने लगा है।

इसी बीच ट्रंप का बयान एक बड़ा संकेत लेकर आया है। उन्होंने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कहा कि अमेरिका अपने उद्देश्यों को हासिल करने के करीब है और अब वह इस युद्ध को धीरे-धीरे समाप्त करने पर विचार कर रहा है। उन्होंने स्पष्ट किया कि ईरान की मिसाइल क्षमता को कमजोर करना, उसकी वायुसेना को निष्क्रिय करना, उसे परमाणु शक्ति बनने से रोकना और खाड़ी क्षेत्र में अपने सहयोगियों की रक्षा करना उनके मुख्य लक्ष्य थे। हालांकि, उन्होंने सत्ता परिवर्तन को अपना उद्देश्य नहीं बताया, जिससे यह संकेत मिलता है कि अमेरिका इस संघर्ष को सीमित दायरे में ही खत्म करना चाहता है।

लेकिन ट्रंप के इस बयान के पीछे केवल सैन्य कारण नहीं हैं, बल्कि

अंतरराष्ट्रीय दबाव भी एक बड़ी वजह बनता जा रहा है। नाटो के अन्य सदस्य देशों को "कायर" कहकर ट्रंप ने भले ही नाराजगी जताई हो, लेकिन हकीकत यह है कि इस युद्ध में अमेरिका को व्यापक समर्थन नहीं मिला है। कई यूरोपीय देश इस संघर्ष से दूरी बनाए हुए हैं और लगातार कूटनीतिक समाधान की बात कर रहे हैं।

युद्ध के इस दौर में एक बेहद खतरनाक मोड़ तब आया, जब ईरान के सबसे सुरक्षित माने जाने वाले परमाणु केंद्र नतांज पर हमला हुआ। नतांज परमाणु केंद्र पर हुए इस हवाई हमले ने पूरी दुनिया की चिंता बढ़ा दी। तेहरान से करीब 220 किलोमीटर दूर स्थित यह केंद्र ईरान के परमाणु कार्यक्रम का प्रमुख हिस्सा है। हमले में इस परिसर की कई इमारतें नष्ट हो गईं, हालांकि राहत की बात यह रही कि मुख्य यूरेनियम संवर्धन इकाई, जो जमीन के काफी नीचे स्थित है, सुरक्षित बताई गई।

इस हमले के बाद सबसे बड़ा डर रेडियोधर्मी रिसाव का था। लेकिन अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के प्रमुख रफाएल ग्रॉसी ने साफ किया कि शुरुआती जांच में किसी प्रकार के रेडिएशन का संकेत नहीं मिला है। ईरान के परमाणु प्रमुख मोहम्मद इस्लामी ने भी स्थिति को नियंत्रण में बताया है। हालांकि, विशेषज्ञों का मानना है कि यदि ऐसे हमले दोहराए गए, तो भविष्य में स्थिति गंभीर हो सकती है।

युद्ध के मैदान में जहां एक ओर मिसाइलें और ड्रोन गरज रहे हैं, वहीं दूसरी ओर कूटनीति भी अपने रास्ते तलाश रही है। ट्रंप द्वारा युद्ध समाप्ति के संकेत देना यह दर्शाता है कि अमेरिका अब इस संघर्ष को लंबा खींचने के पक्ष में नहीं है। इसके पीछे एक बड़ा कारण घरेलू दबाव भी हो सकता है, क्योंकि लंबे युद्ध का आर्थिक और राजनीतिक असर अमेरिका के भीतर भी महसूस किया जाने लगा है।

ईरान ने भी इस दौरान अपनी ताकत का प्रदर्शन किया है। उसने न केवल खाड़ी देशों में अमेरिकी ठिकानों को निशाना बनाया, बल्कि हिंद महासागर में स्थित रणनीतिक बेस डिएगो गार्सिया पर भी हमला करने की कोशिश की। हालांकि, कुछ मिसाइलें अपने लक्ष्य से चूक गईं, लेकिन यह स्पष्ट हो गया कि ईरान अब रक्षात्मक नहीं, बल्कि आक्रामक रणनीति अपना रहा है।

इस पूरे घटनाक्रम में आम नागरिक सबसे ज्यादा प्रभावित हुए हैं। हजारों परिवार उजड़ गए, लाखों लोग भय के साये में जी रहे हैं और पूरे क्षेत्र में अस्थिरता का माहौल है। अस्पतालों पर दबाव बढ़ गया है, बुनियादी सुविधाएं प्रभावित हुई हैं और लोगों के सामने रोजमर्रा की जरूरतों का संकट खड़ा हो गया है।

तेल और गैस केंद्रों पर हमलों के कारण वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला भी प्रभावित हुई है। कतर, बहरीन, सऊदी अरब और यूएई जैसे देशों के ठिकानों पर हमले होने से यह संकट और गहरा गया है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में अस्थिरता बढ़ी है और कई देशों को ऊर्जा आपूर्ति के वैकल्पिक रास्ते तलाशने पड़ रहे हैं।

इस बीच ट्रंप ने होर्मुज स्ट्रेट की सुरक्षा को लेकर एक विवादास्पद बयान भी दिया है। उन्होंने कहा कि इसकी जिम्मेदारी उन देशों की होनी चाहिए, जो यहां से तेल लेते हैं। अमेरिका केवल तभी मदद करेगा, जब उससे अनुरोध किया जाएगा। यह बयान अमेरिका की बदलती रणनीति और उसकी सीमित भागीदारी की ओर इशारा करता है।

तीन हफ्तों के भीतर इस युद्ध ने यह साबित कर दिया है कि आधुनिक युद्ध केवल हथियारों की ताकत से नहीं जीते जाते। इसमें आर्थिक दबाव, कूटनीति, अंतरराष्ट्रीय समर्थन और जनमत भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है। अमेरिका और इजरायल की सैन्य शक्ति के बावजूद, ईरान ने जिस तरह जवाब दिया है, उसने इस संघर्ष को संतुलित बना दिया है।

अब दुनिया की नजरें इस बात पर टिकी हैं कि क्या यह युद्ध वास्तव में समाप्ति की ओर बढ़ेगा, या फिर यह केवल एक अस्थायी विराम होगा। ट्रंप के बयान से उम्मीद जरूर जगी है, लेकिन जमीनी हालात अभी भी तनावपूर्ण बने हुए हैं।

इस पूरे घटनाक्रम ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या युद्ध किसी समस्या का समाधान है, या यह केवल नए संकटों को जन्म देता है। तीन हफ्तों में हुई तबाही, जान-माल का नुकसान और वैश्विक अस्थिरता यह दर्शाती है कि शांति ही एकमात्र स्थायी समाधान है।

पश्चिम एशिया की यह जंग अब केवल क्षेत्रीय नहीं रही, बल्कि इसका असर पूरी दुनिया पर पड़ रहा है। ऐसे में यह जरूरी हो जाता है कि सभी पक्ष संयम बरतें और कूटनीतिक रास्ते तलाशें, ताकि इस आग को और फैलने से रोका जा सके। फिलहाल, दुनिया एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहां हर निर्णय आने वाले समय की दिशा तय करेगा।

सस्ते डॉलर का जाल: भरोसे की कीमत 6.50 लाख, सूरत में फिल्मी स्टाइल ठगी से हड़कंप

(जीएनएस)। सूरत। तेज रफ्तार से आगे बढ़ते कारोबार और अवसरों के शहर में कभी-कभी ऐसे जाल भी बिछे होते हैं, जिनमें फंसकर समझदार से समझदार व्यक्ति भी भारी नुकसान उठा बैठता है। ऐसा ही एक चौंकाने वाला मामला सूरत के वराछा इलाके से सामने आया है, जहां सस्ते डॉलर के लालच में एक जमीन कारोबारी 6.50 लाख रुपये गंवा बैठा। यह ठगी इतनी सुनियोजित और फिल्मी अंदाज में अंजाम दी गई कि पीड़ित को संभलने का मौका तक नहीं मिला।

घटना की शुरुआत एक सामान्य बातचीत से हुई, लेकिन धीरे-धीरे यह एक खतरनाक साजिश में बदल गई। योगी चौक स्थित तिरुपति सोसायटी के निवासी कमलेश प्रागजीभाई जोगाणी, जो जमीन और मकान के व्यवसाय से जुड़े हैं, अपने परिचित की मदद के लिए आगे आए थे। उनके मित्र को विदेशी मुद्रा, खासकर डॉलर की जरूरत थी। मदद करने की भावना से उन्होंने अपने बेटे के माध्यम से संपर्क तलाशना शुरू किया।

यहीं से ठगों की एंट्री हुई। बेटे के दोस्त के जरिए सलमान उर्फ तनीम कापड़िया नाम के युवक से संपर्क हुआ, जिसने खुद को विदेशी मुद्रा का जुगाड़ रखने वाला बताया। उसने भरोसा दिलाया कि वह बाजार से काफी कम दर पर डॉलर दिलवा सकता है। यह ऑफर सुनने में जितना आकर्षक था, उतना ही खतरनाक भी साबित हुआ।

सलमान ने बड़ी चालाकी से पहले विश्वास का माहौल बनाया। उसने बातचीत में आत्मविश्वास दिखाया, अपने 'कनेक्शन' का हवाला दिया और बार-बार यह जताया कि उसका काम पूरी तरह सुरक्षित और

भरोसेमंद है। धीरे-धीरे उसने व्यापारी और उनके साथियों का भरोसा जीत लिया। इसके बाद उसने मिलने के लिए भवानी मंदिर के पास बुलाया।

जब कमलेश और उनके साथी वहां पहुंचे, तो कहानी ने अचानक मोड़ लिया। सलमान ने सुरक्षा का बहाना बनाते हुए कहा कि खुले इलाके में इतनी बड़ी डील करना ठीक नहीं होगा। उसने उन्हें लालगेट की एक सुनसान गली में चलने के लिए राजी कर लिया। यहीं से ठगी का असली खेल शुरू हुआ।

सुनसान गली में पहुंचकर सलमान ने पैसे गिनने की बात कही। कमलेश ने भरोसे में आकर 6.50 लाख रुपये से भरी थैली उसे सौंप दी। विश्वास बढ़ाने के लिए सलमान ने अपने एक साथी फैजल को वहीं उनके पास छोड़ दिया और खुद डॉलर लाने के बहाने बैग लेकर अंदर चला गया। यह पूरा दृश्य किसी फिल्म के सीन जैसा था—एक व्यक्ति पैसे लेकर अंदर जाता है, दूसरा भरोसा दिलाने के लिए बाहर रुकता है।

समय बीतता गया, लेकिन सलमान वापस नहीं लौटा। कुछ देर बाद कमलेश को शक होने लगा। उन्होंने फैजल से पूछताछ शुरू की, लेकिन तभी उसने अचानक झगड़ा करने का नाटक शुरू कर दिया। शोर-शराबे और अफरा-तफरी के बीच वह भी मौके से फरार हो गया। देखते ही देखते पूरी साजिश सामने आ गई—न डॉलर, न पैसा, केवल ठगी।

यह घटना केवल आर्थिक नुकसान तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह भरोसे के टूटने की कहानी भी थी। एक साधारण मदद की भावना कैसे एक बड़ी ठगी में बदल गई, यह इस घटना से साफ झलकता है। पीड़ित व्यापारी तुरंत लालगेट पुलिस स्टेशन पहुंचे और पूरी घटना की शिकायत दर्ज करवाई।

पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेते हुए तुरंत कार्रवाई शुरू कर दी है। सलमान और फैजल के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया गया है। आसपास के CCTV फुटेज खंगाले जा रहे हैं, ताकि आरोपियों के भागने के रास्ते और उनकी पहचान के बारे में ठोस जानकारी मिल सके। पुलिस का कहना है कि यह गिरोह पहले भी इस तरह की वारदातों में शामिल हो सकता है।

इस घटना ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि लालच और जल्दबाजी अपराधियों के लिए सबसे बड़ा हथियार होते हैं। बाजार से कम कीमत पर कोई भी चीज मिलने का दावा अक्सर धोखाधड़ी की ओर इशारा करता है। खासकर विदेशी मुद्रा जैसे संवेदनशील मामलों में अनधिकृत व्यक्तियों से लेन-देन करना बेहद जोखिम भरा हो सकता है।

सूरत जैसे व्यापारिक शहर में इस तरह की घटनाएं न केवल व्यक्तिगत नुकसान का कारण बनती हैं, बल्कि पूरे कारोबारी माहौल को भी प्रभावित करती हैं। इसलिए जरूरी है कि लोग सतर्क रहें और किसी भी आकर्षक ऑफर के पीछे की सच्चाई को समझने की कोशिश करें।

पुलिस ने आम जनता से अपील की है कि वे केवल अधिकृत बैंकों या मान्यता प्राप्त संस्थानों के माध्यम से ही विदेशी मुद्रा का लेन-देन करें। किसी भी अनजान व्यक्ति के झांसे में आकर बड़ी रकम का सौदा करने से पहले पूरी जांच-पड़ताल जरूर करें।

यह घटना एक चेतावनी है—आज के समय में ठग केवल चालाक नहीं, बल्कि बेहद योजनाबद्ध तरीके से काम करते हैं। वे पहले विश्वास जीतते हैं, फिर धीरे-धीरे जाल बुनते हैं और आखिर में ऐसा वार करते हैं कि संभलने का मौका तक नहीं मिलता।

कमलेश जोगाणी के साथ हुई यह ठगी एक सबक है कि व्यापार में जितना जरूरी लाभ कमाना है, उतना ही जरूरी सावधानी बरतना भी है। क्योंकि एक छोटी सी चूक, वर्षों की मेहनत को पलभर में खत्म कर सकती है।

समंदर की शक्ति में नया सितारा: 'तारागिरी' से और मजबूत होगी भारतीय नौसेना

(जीएनएस)। विशाखापत्तनम। भारत की समुद्री ताकत एक नए युग में प्रवेश करने जा रही है, जब 3 अप्रैल को स्वदेशी स्टील्थ फ्रिगेट आईएनएस तारागिरी को औपचारिक रूप से भारतीय नौसेना में शामिल किया जाएगा। यह केवल एक युद्धपोत का शामिल होना नहीं है, बल्कि आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक ठोस और निर्णायक कदम है, जो यह दर्शाता है कि भारत अब अपनी सुरक्षा जरूरतों को खुद पूरा करने की क्षमता तेजी से विकसित कर रहा है।

इस भव्य समारोह की अध्यक्षता रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह करेंगे, जहां नौसेना के वरिष्ठ अधिकारी, वैज्ञानिक और रक्षा क्षेत्र से जुड़े कई गणमान्य लोग उपस्थित रहेंगे। विशाखापत्तनम का नौसैनिक अड्डा इस ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बनेगा, जब भारत की स्वदेशी तकनीक और इंजीनियरिंग कौशल का एक और प्रतीक समुद्र में अपनी ताकत का प्रदर्शन करने के लिए तैयार होगा। 'तारागिरी' प्रोजेक्ट 17ए के तहत विकसित अत्याधुनिक फ्रिगेट श्रेणी का चौथा और मझगांव डॉक शिपबिल्डिंग लिमिटेड, मुंबई द्वारा निर्मित तीसरा युद्धपोत है। यह तथ्य अपने आप में महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह परियोजना भारत की रक्षा उत्पादन क्षमता में तेजी से हो रहे विकास को दर्शाती है। पहले जहां भारत को इस तरह के उन्नत युद्धपोतों के लिए विदेशी तकनीक पर निर्भर रहना पड़ता था, वहीं अब देश खुद ऐसे अत्याधुनिक पोत तैयार कर रहा है। करीब 6,670 टन वजनी यह विशाल युद्धपोत आधुनिक तकनीक से लैस है। इसकी सबसे बड़ी खासियत इसकी स्टील्थ क्षमता है, यानी यह दुश्मन के रडार से बचते हुए अपने मिशन को अंजाम देने में सक्षम है। समुद्र में युद्ध के बदलते स्वरूप में यह विशेषता अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है, क्योंकि इससे दुश्मन के लिए इसकी मौजूदगी का पता लगाना बेहद कठिन हो जाता है।

'तारागिरी' में अत्याधुनिक हथियार प्रणाली, सेंसर और स्वचालित नियंत्रण तंत्र शामिल हैं, जो इसे बहु-आयामी अभियानों के लिए सक्षम बनाते हैं। यह युद्धपोत समुद्री सुरक्षा, निगरानी, एंटी-सबमरीन ऑपरेशन और एंटी-एयर वॉरफेयर जैसे कई प्रकार के मिशनों को एक साथ अंजाम देने में सक्षम है। इस तरह यह भारतीय नौसेना के लिए एक 'मल्टी-रोल' प्लेटफॉर्म के रूप में कार्य करेगा।

इसकी एक और प्रमुख विशेषता इसका प्रोपल्शन सिस्टम है, जिसमें संयुक्त डीजल या गैस (CODOG) प्रणाली का उपयोग किया गया है।

संपादकीय

सीवर में मौतें

सदियों की लाचारी और समाज की संवेदनहीनता के चलते हाथ से सीवर की सफाई की अमानवीय प्रथा बदस्तूर जारी है। जारी ही नहीं है बल्कि मजबूर सफाई कर्मियों की मौत का सबब भी बनी हुई है। निश्चय ही यह घिनौनी प्रथा किसी भी सभ्य समाज के लिये एक कलंक के समान ही है। सबसे बड़ी चिंता की बात यह है कि हाथ से सीवर लाइन साफ करने की प्रथा मजबूर लोगों की लगातार जान ले रही है। हाल ही में लोकसभा में पेश किए गए आंकड़े इस समस्या के भयावह पक्ष को ही उजागर करते हैं। केंद्र सरकार की ओर बीते सप्ताह लोकसभा में बताया गया कि साल 2017 से अब तक देश में सीवर और सेप्टिक टैंक साफ करते हुए 620 से अधिक सफाईकर्मियों की मौत हो चुकी है। कहना कठिन है कि ये आंकड़े वास्तविक हैं और सभी मौतों को देश में रिपोर्ट किया जा रहा है। ग्रामीण व दूरदराज के इलाकों में ठेकेदार दिहाड़ीदार सफाई कर्मियों की मौत को रफा-दफा करने का प्रयास करते हैं। कुछ चतुर-चालाक लोग परिजनों की मजबूरी को भांपते हुए छोटी-मोटी रकम देकर मामले पर पर्दा डाल देते हैं। ऐसे मामले शायद ही सामने आते हों कि सरकार के सख्त निर्देशों के बावजूद सफाईकर्मियों से सीवर व सेप्टिक टैंक की सफाई करवाने वाले ठेकेदार व स्थानीय निकाय के अधिकारियों को दंडित किया गया हो। क्या किसी लोकतांत्रिक समाज में किसी मजबूर सफाईकर्मी के जीवन का कोई मूल्य नहीं है? निस्संदेह, लोकसभा में पेश किए गए आंकड़े घोर लापरवाही को ही उजागर करते हैं। विडंबना यह भी है कि जहां करीब 539 परिवारों को पूरा मुआवजा मिला है, वहीं करीब 52 परिवारों को कोई पैसा नहीं मिला। निर्विवाद रूप से किसी मृत सफाई कर्मी के परिजनों को दी जाने वाली आर्थिक सहायता कोई दान नहीं है, बल्कि समाज का एक कानूनी और नैतिक दायित्व भी है। जब इस जरूरी सहायता में कोई कमी रह जाती है तो हमारी व्यवस्थागत उदासीनता ही उजागर होती है।

निस्संदेह, यह कष्टकारी स्थिति साल 2047 में देश को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प पर सवालिया निशान लगाती है। वहीं सरकारी दावा है कि मैनुअल स्कैवेंजर्स के रूप में रोजगार निषेध और उनके पुनर्वास अधिनियम, 2013 में किए गए एक सर्वेक्षण में देशभर के किसी भी जिले में हाथ से मैला साफ करने वाले सफाईकर्मी नहीं पाए गए हैं। सवाल ये है कि जब हाथ से सफाई करने वाले सफाई कर्मचारी देश में नहीं हैं तो सीवर व सेप्टिक टैंक में जहरीली गैस के चपेट में आकर लोगों के मरने की खबरें कैसे आ रही हैं? यह दुखद ही है कि बीते मंगलवार को छत्तीसगढ़ के रायपुर स्थित एक प्रमुख अस्पताल में सेप्टिक टैंक की सफाई करते समय जहरीली गैस की चपेट में आने से तीन सफाई कर्मचारियों की दर्दनाक मौत हो गई। सीवर-सेप्टिक टैंक की सफाई में मशीन के उपयोग को बढ़ावा देकर मैनुअल स्कैवेंजिंग को खत्म करने के उद्देश्य से ही सरकार द्वारा साल 2023-24 में शुरू की गई राष्ट्रीय मशीनीकृत स्वच्छता पारिस्थितिकीय तंत्र यानी नमस्ते परियोजना को अभी भी लंबा रास्ता तय करना है। केंद्रीय सामाजिक न्याय राज्य मंत्री ने पिछले दिनों स्वीकार किया था कि मशीनीकरण के कारण दक्षता या सफाई व्यवस्था में सुधार के जरूरी संकेतक अभी तक पहचान में नहीं आए हैं। राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग को पिछले वर्ष वेतन का भुगतान न होने, सुरक्षा उपकरणों की कमी और जाति आधारित भेदभाव को लेकर करीब 842 शिकायतें प्राप्त हुई थीं। जो इस बात का प्रमाण हैं कि समस्या की जड़ें बहुत गहरे रूप में विद्यमान हैं। हालांकि सरकारी दावा है कि सफाई का काम व्यवसाय पर आधारित है। लेकिन आंकड़े बताते हैं कि सदियों से हाशिये पर पड़े समुदायों के श्रमिकों के बूते ही सफाई व्यवस्था चलायी जा रही है। निस्संदेह, दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था का दावा करने वाले समाज को यह सुनिश्चित करना होगा कि किसी भी नागरिक को अमानवीय परिस्थितियों में काम करने के लिये बाध्य नहीं किया जाना चाहिए। श्रम की गरिमा के सवाल का जबाव महज एक नारे से हासिल नहीं किया जा सकता। इसे एक जमीनी हकीकत बनाना होगा।

ड्रैगन ने चल दी है नई चाल, अब पानी से करेगा वार, भारत आखिर कैसे देगा जवाब?

> यह वही नदी है जो भारत में सियांग और फिर ब्रह्मपुत्र बनती है और आगे बांग्लादेश में जमुना के रूप में बहती है। अकेले ब्रह्मपुत्र घाटी में भारत के करीब तेरह करोड़ लोगों की आजीविका इस नदी पर निर्भर है जबकि बांग्लादेश में यह संख्या करोड़ों में है।

चीन ने तिब्बत के यारलुंग सांगपो नदी पर जिस विशाल जलविद्युत परियोजना की शुरुआत की है, उसने एशिया की भू-राजनीति में हलचल नहीं बल्कि भूकंप ला दिया है। यह कोई साधारण बांध नहीं, बल्कि पानी के जरिये ताकत हासिल करने की खुली रणनीति है। और सबसे खतरनाक बात यह है कि इसकी मार सीधे भारत और बांग्लादेश जैसे निचले देशों पर पड़ने वाली है। इस साल की शुरुआत में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अपने नववर्ष संबोधन में जब इस परियोजना का ऐलान किया तो दुनिया को साफ संदेश मिला कि चीन अब न तो पर्यावरण की चिंता करेगा और न ही पड़ोसी देशों की। करीब 167 अरब डॉलर की लागत से बन रही यह परियोजना दुनिया की सबसे बड़ी जलविद्युत योजना बताई जा रही है जिसकी क्षमता 67 से 80 गीगावाट तक आंकी जा रही है। तुलना करें तो यह थ्री गॉर्जेस बांध से भी लगभग तीन गुना बड़ी हो सकती है।यह वही नदी है जो भारत में सियांग और फिर ब्रह्मपुत्र बनती है और आगे बांग्लादेश में जमुना के रूप में बहती है। अकेले ब्रह्मपुत्र घाटी में भारत के करीब तेरह करोड़ लोगों की आजीविका इस नदी पर निर्भर है जबकि बांग्लादेश में यह संख्या करोड़ों में है। यानी यह परियोजना सीधे करोड़ों जिंदगियों पर असर डालने वाली है।चीन इस परियोजना को हरित ऊर्जा का नाम दे रहा है, लेकिन असल खेल कहीं ज्यादा गहरा है। नदी के ऊपरी हिस्से पर नियंत्रण का मतलब है नीचे बहने वाले पानी पर नियंत्रण। और यही वह बिंदु है जहां यह परियोजना एक रणनीतिक हथियार बन जाती है।

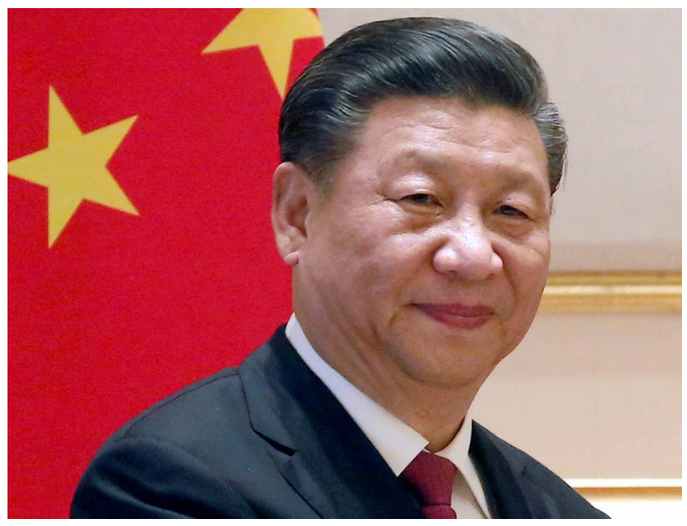

विशेषज्ञों का साफ कहना है कि यदि चीन चाहे तो सूखे के समय पानी रोक सकता है और तनाव के समय अचानक छोड़ सकता है। इससे बाढ़ जैसी तबाही पैदा हो सकती है। यही वजह है कि भारत के पूर्वोत्तर में इसे वाटर बम कहा जा रहा है।

लोवी संस्थान की एक रिपोर्ट ने चेतावनी दी है कि तिब्बत के पठार पर चीन का बढ़ता जल नियंत्रण भारत की अर्थव्यवस्था पर गला घोंटने वाला दबाव बना सकता है। यह केवल जल संकट नहीं बल्कि खाद्य संकट और ऊर्जा संकट को भी जन्म दे सकता है। जिस इलाके में यह परियोजना बन रही है वह भूगर्भीय दृष्टि से बेहद अस्थिर है। यह क्षेत्र दुनिया की सबसे गहरी घाटियों में गिना जाता है और यहां भूकंप तथा भूस्खलन आम बात है। ऐसे में इतनी बड़ी संरचना बनाना सीधे आपदा को निमंत्रण देना है। यदि किसी भी कारण से बांध को नुकसान पहुंचता है तो उसका असर हजारों किलोमीटर दूर तक जा सकता है। ब्रह्मपुत्र की तेज धारा और विशाल जल प्रवाह इसे और भी खतरनाक बना देते हैं।

इसके अलावा नदी के प्राकृतिक प्रवाह में बदलाव से पूरे पारिस्थितिकी तंत्र पर असर पड़ेगा। अनुमान है कि ब्रह्मपुत्र हर साल लगभग सात सौ मिलियन टन गाद लेकर आती है जो असम और बांग्लादेश की जमीन को उपजाऊ बनाती है। यदि यह प्रवाह बाधित हुआ तो खेती पर सीधा असर पड़ेगा।

इस पूरे मामले में सबसे ज्यादा चिंता पारदर्शिता को लेकर है। न तो पर्यावरणीय रिपोर्ट सार्वजनिक की गई है और न ही स्थानीय लोगों से कोई राय ली गई है। तिब्बती समुदाय और पर्यावरण कार्यकर्ताओं की आवाज को पूरी तरह नजरअंदाज किया जा रहा है। भारत के पूर्व विदेश सचिव कंवल सिब्बल ने इसे चीन का दोहरा रवैया बताया है। उन्होंने हाल ही में कहा कि चीन जब अपने हित में होता है तो अंतरराष्ट्रीय नियमों की बात करता है और जब नहीं होता तो उन्हें कुचल देता है।

चीन की इस चाल के जवाब में भारत ने भी अपनी रणनीति तेज कर दी है। भारत पूर्वोत्तर में 208 बांध बनाने की योजना पर काम कर रहा है जिसकी कुल क्षमता 75 गीगावाट से ज्यादा होगी। इसमें सबसे बड़ा प्रोजेक्ट अपर सियांग है जिसकी ऊंचाई लगभग तीन सौ मीटर और क्षमता ग्यारह गीगावाट होगी। इसका मकसद केवल बिजली बनाना नहीं बल्कि चीन के जल नियंत्रण के खतरे को संतुलित करना है। भारत की योजना है कि वर्ष 2047 तक ब्रह्मपुत्र बेसिन से छिहत्तर गीगावाट से अधिक बिजली पैदा की जाए। यानी यह साफ है कि यह अब ऊर्जा की दौड़ नहीं बल्कि रणनीतिक टकराव बन चुका है। अब यह संघर्ष केवल नदी तक सीमित नहीं रहा। जलविद्युत परियोजनाएं अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल नेटवर्क से जुड़ चुकी हैं। चीन अपने बांधों को स्मार्ट ऊर्जा तंत्र से जोड़ रहा है जबकि भारत भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित निगरानी और डेटा विश्लेषण पर काम कर रहा है। इसका सीधा मतलब है कि जो देश पानी को नियंत्रित करेगा वही ऊर्जा और डेटा दोनों पर नियंत्रण हासिल करेगा। यानी भविष्य की ताकत अब पानी और तकनीक के गठजोड़ में छिपी है। सबसे बड़ा खतरा यह है कि ब्रह्मपुत्र को लेकर भारत और चीन के बीच कोई औपचारिक जल समझौता नहीं है। यानी कोई बाध्यता नहीं, कोई जवाबदेही नहीं। अतीत में चीन ने साल 2000 में आई बाढ़ के दौरान जरूरी आंकड़े साझा नहीं किए थे जिससे भारी नुकसान हुआ था। इससे भरोसे की कमी और गहरी हो गई है।

आज हिमालय केवल सीमाओं का नहीं बल्कि पानी और ऊर्जा का युद्ध क्षेत्र बन चुका है। चीन अपनी तकनीकी और आर्थिक ताकत के बल पर बढ़त लेने की कोशिश कर रहा है, जबकि भारत जवाबी संतुलन बनाने में जुटा है। बांग्लादेश के लिए यह स्थिति और भी गंभीर है क्योंकि वह पूरी तरह इस नदी पर निर्भर है। यदि सूखे के समय पानी घटा तो वहां खाद्य संकट गहरा सकता है।

बहरहाल, चीन का यह मेगा बांध विकास का प्रतीक कम और वर्चस्व की रणनीति ज्यादा लगता है। यह परियोजना आने वाले समय में एशिया की स्थिरता को प्रभावित कर सकती है। अब यह केवल पर्यावरण या ऊर्जा का मुद्दा नहीं रहा। यह सत्ता, संसाधन और भविष्य की दिशा तय करने वाली जंग बन चुका है। ब्रह्मपुत्र की हर बूंद अब सिर्फ पानी नहीं रही, बल्कि वह आने वाले समय की शक्ति और संघर्ष की कहानी लिख रही है।

प्रेरणा

एक अनाथ बालक की अदम्य जिजीविषा की प्रेरक कथा

सोवियत रूस की कठोर और विषम परिस्थितियों में एक ऐसा बालक जन्मा, जिसके जीवन की शुरुआत ही संघर्षों से हुई थी। बचपन में ही माता-पिता का साया उसके सिर से उठ गया और जीवन की जिम्मेदारियों ने उसे समय से पहले ही परिपक्व बना दिया। उसकी दुनिया सीमित थी—एक बूढ़ी दादी, गरीबी की मार, और जीवनयापन की कठिन जद्दोजहद। लेकिन इन सबके बीच एक चीज थी जो कभी नहीं टूटी—उसकी सीखने की तीव्र इच्छा, उसका ज्ञान के प्रति प्रेम।

जब उस बालक के कंधों पर अपनी दादी का पालन-पोषण करने की जिम्मेदारी आई, तो उसे अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी। यह निर्णय उसके लिए बेहद पीड़ादायक था, क्योंकि पढ़ाई ही उसकी सबसे बड़ी आशा थी। परंतु परिस्थितियों ने उसे मजबूर कर दिया कि वह एक कबाड़ी की दुकान पर काम करने लगे। दिनभर मेहनत करना, थकान से चूर हो जाना—यह उसकी दिनचर्या बन गई थी। लेकिन उसके भीतर जो ज्ञान की ज्योति जल रही थी, वह बुझने को तैयार नहीं थी।

कबाड़ी की दुकान पर आने वाली रद्दी में अक्सर पुरानी किताबें, अखबार और पत्रिकाएं होती थीं। जहां अन्य लोग इन्हें बेकार समझते थे, वहीं उस बालक के लिए ये खजाना थीं। वह इन किताबों को उठाता, धूल झाड़ता और रात के समय उन्हें पढ़ने बैठ जाता। उसके पास कोई शिक्षक नहीं था, कोई मार्गदर्शक नहीं था, लेकिन उसकी जिज्ञासा ही उसका गुरु बन गई थी। जो शब्द या विचार उसे समझ में नहीं आते, वह कबाड़ी से या दुकान पर आने वाले ग्राहकों से पूछ लेता। कई बार लोग उसकी जिज्ञासा पर हंसते, लेकिन वह हतोत्साहित नहीं होता। उसके लिए ज्ञान प्राप्त करना सबसे बड़ा लक्ष्य था।

धीरे-धीरे उसकी समझ गहरी होती गई। उसने केवल पढ़ना ही नहीं सीखा, बल्कि सोचना भी शुरू किया। वह समाज को, लोगों के जीवन को, उनकी पीड़ाओं और संघर्षों को समझने लगा। उसके मन में विचारों का एक विशाल संसार विकसित हो रहा था। इन विचारों को अभिव्यक्त करने की तीव्र इच्छा उसके भीतर जागी। उसने लिखना शुरू किया—पहले छोटे-छोटे लेख, फिर कहानियां।

उसने अपने लिखे हुए लेख स्थानीय अखबारों को भेजने शुरू किए। शुरुआत में उसे कोई उत्तर नहीं मिला, लेकिन उसने हार नहीं मानी। वह लगातार लिखता रहा और अपने लेख भेजता रहा। अंततः एक दिन उसका लेख प्रकाशित हुआ। यह उसके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। पहली बार उसे यह महसूस हुआ कि उसके विचारों की भी कोई कीमत है, उसकी आवाज भी सुनी जा सकती है।

अखबारों के संपादकों ने उसके लेखन को सराहा और उसे प्रोत्साहित किया। यह प्रोत्साहन उसके लिए किसी अमृत से कम नहीं था। उसके भीतर आत्मविश्वास जाग उठा। उसने और अधिक मेहनत करना शुरू किया, अपने लेखन को और निखारा। अब वह केवल एक मजदूर नहीं था, बल्कि एक विचारक बन रहा था।

समय बीतता गया और वह बालक धीरे-धीरे एक महान लेखक के रूप में उभरकर सामने आया। वही बालक आगे चलकर मैक्सिम गोर्की के नाम से विश्वभर में प्रसिद्ध हुआ। उसकी रचनाओं में जीवन के संघर्ष, समाज की सच्चाई और मानवीय संवेदनाओं की गहराई झलकती थी। उसने अपने अनुभवों को शब्दों में ढाला और उन लोगों की आवाज बना, जिन्हें समाज अक्सर नजरअंदाज कर देता है।

उसकी सबसे प्रसिद्ध कृतियों में से एक 'मां' (Mother) है, जो आज भी साहित्य की दुनिया में एक कालजयी उपन्यास मानी जाती है। इस उपन्यास में उसने न केवल एक व्यक्ति की कहानी कही, बल्कि पूरे समाज के संघर्षों और बदलाव की आकांक्षा को चित्रित किया। उसकी लेखनी में सच्चाई थी, दर्द था, और एक बेहतर दुनिया की उम्मीद थी।

मैक्सिम गोर्की का जीवन हमें यह सिखाता है कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, अगर हमारे भीतर सीखने की इच्छा और आगे बढ़ने का जज्बा है, तो हम किसी भी ऊंचाई को छू सकते हैं। उसने कभी यह नहीं सोचा कि वह गरीब है, अनाथ है या उसके पास संसाधनों की कमी है। उसने केवल अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित किया और निरंतर प्रयास करता रहा।

उसकी कहानी यह भी बताती है कि शिक्षा केवल विद्यालयों तक सीमित नहीं होती। अगर हमारे भीतर जिज्ञासा है, तो हम कहीं से भी सीख सकते हैं—चाहे वह कबाड़ी की दुकान ही क्यों न हो। किताबें, अनुभव, और लोगों से बातचीत—ये सभी हमारे शिक्षक बन सकते हैं।

आज के समय में जब हमारे पास संसाधनों की कोई कमी नहीं है—इंटरनेट, पुस्तकालय, स्कूल और विश्वविद्यालय—तब भी हम कई बार छोटे-छोटे बहानों के कारण अपने सपनों को छोड़ देते हैं। लेकिन मैक्सिम गोर्की की कहानी हमें यह प्रेरणा देती है कि अगर एक अनाथ बालक, जिसने रद्दी की किताबों से शिक्षा प्राप्त की, दुनिया का महान लेखक बन सकता है, तो हम क्यों नहीं?

यह कथा केवल एक व्यक्ति की सफलता की कहानी नहीं है, बल्कि यह मानव इच्छाशक्ति की शक्ति का प्रमाण है। यह हमें सिखाती है कि असली बुलंदी लगन, मेहनत और आत्मविश्वास से हासिल होती है। जीवन में आने वाली कठिनाइयां हमें रोकने के लिए नहीं, बल्कि हमें मजबूत बनाने के लिए होती हैं।

अंततः, यह कहानी हमें यह संदेश देती है कि हमें अपने सपनों को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। चाहे रास्ता कितना भी कठिन क्यों न हो, अगर हम निरंतर प्रयास करते रहें और अपने लक्ष्य पर विश्वास बनाए रखें, तो सफलता एक दिन अवश्य हमारे कदम चूमेगी। यही है सच्ची लगन, और यही है असली बुलंदी।

Yogi Adityanath के 9 साल: Ram Mandir से Kashi Corridor तक, UP में सांस्कृतिक पुनर्जागरण

वर्ष 2017 में विधानसभा चुनावों के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में बनी भाजपा गठबंधन की सरकार ने नौ वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। इन नौ वर्षों में सरकार ने कानून व्यवस्था, सांस्कृतिक पुनर्जागरण तथा विकास के अनेक प्रतिमान गढ़े हैं। अपनी उपलब्धियों को जन जन तक पहुँचाने के लिए सरकार ने, ''नवनिर्माण के नौ वर्ष'' नामक पुस्तक का प्रकाशन भी किया है। वर्ष 2017 के पूर्व उत्तर प्रदेश अराजकता के जाल में फंसा हुआ था। छोटी -छोटी बातों पर फसाद हो जाते थे। कानून और व्यवस्था की बुरी स्थिति के कारण निवेशक यहां आने से डरते थे। मुस्लिम तुष्टिकरण चरम पर था। लोग उल्टा प्रदेश कहकर प्रदेश का उपहास करते थे। 2017 में योगी जी के नेतृत्व में भाजपा की सरकार बनने के बाद से इस स्थिति में व्यापक परिवर्तन हुआ है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का कहना है कि अब प्रदेश की पहचान का संकट समाप्त हो चुका है, सुरक्षा निवेश व विकास प्रदेश की नई पहचान बन चुके हैं। प्रदेश में सभी पर्व शांति, सौहार्द के साथ मनाए जा रहे हैं। कहीं कोई तनाव, कर्फ्यू व दंगा नही है। ऐसे माफियाओं का अंत हुआ है जिनके सामने सपा, बसपा व कांग्रेस की पुरानी सरकारें नतमस्तक हो जाया करती थीं।

शासन व्यवस्था में सुधार व मजबूत कानून व्यवस्था के कारण आज प्रदेश का चहुंमुखी विकास हो रहा है। व्यापक स्तर पर सांस्कृतिक पुनर्जागरण हो रहा है। लंबे कानूनी संघर्ष के बाद अयोध्या में दिव्य व भव्य राम मंदिर का निर्माण हुआ है जहाँ लाखों की संख्या में श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। अयोध्या को अपना एयरपोर्ट, आधुनिकीकृत रेलवे स्टेशन, मेडिकल कालेज मिला, सम्पूर्ण अयोध्या नगरी का नवीनतम और पुरातन संस्कृति के सामंजस्य व समन्वय के साथ व्यापक स्तर पर विकास हो रहा है।

इसी प्रकार काशी का विश्वनाथ धाम कॉरिडोर निर्माण से काशी का स्वरूप भी निखरकर सामने आ रहा है। प्रयागराज में महाकुंभ में 66 करोड़ श्रद्धालुओं ने पुण्य की डुबकी लगाकर इतिहास रच दिया। इसी प्रकार मां विन्ध्यवासिनी कॉरिडोर के निर्माण से मां विन्ध्यवासिनी जाने वाले सभी श्रद्धालुओं को एक विशेष अनुभूति व आध्यात्मिक आनंद की प्राप्ति हो रही है। योगी सरकार आने के बाद प्रदेश में धार्मिक पर्यटन के साथ साथ अन्य पर्यटन गतिविधियों का विकास होने के कारण इस क्षेत्र में युवाओ के लिए रोजगार के नए अवसर खुल रहे हैं। प्रदेश की आस्था, संस्कृति व परंपराओं को सम्मान देते हुए उन्हें नई पहचान दिलाने का प्रयास लगातार जारी है। प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कई अहम प्रयास किए जा रहे हैं, जिसके अंतर्गत 96 लाख एमएमएमई इकाइयां संचालित की जा रही हैं। लखनऊ में राष्ट्र प्रेरणा स्थल का निर्माण किया गया है।

एक जिला-एक उत्पाद योजना, एक जिला एक व्यंजन योजना के साथ ही प्रदेश के हर जिले में कम से कम एक पर्यटन स्थल का विकास किया जा रहा है। विगत नौ वर्षों के कार्यकाल में सरकार ने सुरक्षा, इंफ्रास्ट्रक्चर, निवेश, रोजगार, किसानों के कल्याण, महिलाओं के सशक्तीकरण और गरीबों के उत्थान के लिए व्यापक स्तर पर कार्य किए हैं। अनेकानेक कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से दलितों, वंचितों और समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक सरकारी लाभ पहुंच रहा है। शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और सेवा क्षेत्रों में सुधार करते हुए सुशासन की दिशा में भी उल्लेखनीय प्रगति हुई है।

प्रदेश में हिंदू समाज के मतांतरण को रोकने के लिए एक कड़ा कानून लाया गया और साथ ही लव जिहाद जैसी घटनाओं को रोकने के लिए भी प्रदेश सरकार कनून लेकर आई। बेटियों की सुरक्षा के लिए एंटी रोमियो स्क्वायड का गठन किया गया। महिला सुरक्षा एवं सशक्तीकरण को बढ़ावा देने के लिए कई अहम कदम सरकार द्वारा समय-समय पर उठाए जाते रहे हैं। नारी सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन को समर्पित मिशन शक्ति अभियान प्रदेशभर में चलाया जा रहा है। मुख्यमंत्री सुमंगला योजना से बेटियां सशक्त हो रही हैं। प्रदेश की पीएसी को जीवन्त करते हुए प्रदेश में पहली बार पीएसी मे महिलाओं के लिए तीन नई बटालियन की शुरुआत की गई। गरीब बेटियों के लिए विवाह के समय दी जाने वाली सरकारी सहायता भी बढ़ा दी गई है। मेधावी बेटियों के लिए स्कूटी योजना आई है।

प्रदेश का विकास परिवर्तनकारी है आज प्रदेश में सात एक्सप्रेस वे संचालित हैं, 15 का विकास कार्य प्रगति पर है। प्रदेश में 16 एयरपोर्ट संचालित हो रहे हैं और 8 निर्माणाधीन हैं। बहु प्रतीक्षित जेवर एयरपोर्ट का उद्घाटन आगामी 28 मार्च, 2026 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी करेंगे। सात प्रमुख शहरों में मेट्रो सेवा चल रही है। नई सड़क परियोजनाएं राज्य के विकास के लिए पहचान बन चुकी हैं। वाराणसी से प्रयागराज और बलिया से अयोध्या तक वाटर-वे की सुविया बढ़ाई जा रही है।

उत्तर प्रदेश तीव्र गति से विकसित प्रदेश बनने की राह पर अग्रसर है। खाद्यान्न, गन्ना, आम एवं दुग्ध उत्पादन सहित अनेक क्षेत्रों में यूपी देश के पहले पायदान पर पहुंच चुका है। प्रदेश के किसानों को पूरी ईमानदारी से, समय पर भुगतान तो हो रहा है। किसानों की आय दोगुनी करने के लिए व्यापक योजनाएं चलाई जा रही हैं। किसानों तक केंद्र व राज्य सरकार की समस्त योजनाओं का लाभ पहुँचाया जा रहा है।

अभियान

जयकारों में जागती शक्ति: चैत्र नवरात्र में मां के दरबार की जीवंत कथा

चैत्र नवरात्र का पावन समय आते ही मानो सम्पूर्ण भारत की आत्मा जाग उठती है। हर ओर भक्ति की धारा बहने लगती है, मंदिरों में घंटियों की गूंज बढ़ जाती है और श्रद्धालुओं के हृदय में मां के दर्शन की तीव्र लालसा जन्म लेने लगती है। वर्ष 2026 के चैत्र नवरात्र में यह आस्था अपने चरम पर तब दिखाई दी, जब लाखों भक्त माता वैष्णो देवी मंदिर की ओर उमड़ पड़े। त्रिकुटा पर्वत की पवित्र चोटियों पर स्थित यह दरबार सदियों से विश्वास का केंद्र रहा है, जहां पहुंचकर हर भक्त अपने जीवन का अर्थ खोजने का प्रयास करता है।

इस बार नवरात्र के प्रारंभ होते ही कटरा का दृश्य बदल गया। छोटे से इस शहर में जैसे श्रद्धा का सागर उमड़ आया। हर सड़क, हर गली 'जय माता दी' के जयकारों से गूंज उठी। श्रद्धालु दूर-दूर से, अलग-अलग राज्यों से, अपनी-अपनी मनोकामनाएं लेकर यहां पहुंचे थे। कोई अपनी बीमारी से मुक्ति की कामना लेकर आया था, तो कोई अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए। हर किसी की आंखों में एक विश्वास था—मां सब सुनेंगी।

19 मार्च से शुरू हुए इस पावन पर्व के दौरान श्रद्धालुओं की संख्या इतनी अधिक बढ़ गई कि प्रशासन को यात्रा को कुछ समय के लिए रोकना पड़ा। शनिवार को शाम 4 बजे तक लगभग 39,000 श्रद्धालु मां के दरबार में दर्शन कर चुके थे, जबकि हजारों अभी भी रास्ते में थे। यह निर्णय सुरक्षा की दृष्टि से लिया गया था, लेकिन इसने भक्तों की आस्था को जरा भी कमजोर नहीं किया।

कटरा से भवन तक जाने वाला रास्ता मानो एक जीवंत कथा बन गया था। कोई नंगे पांव चल रहा था, कोई भजन गाते हुए आगे बढ़ रहा था, तो कोई माता का नाम लेते हुए हर कदम पर माथा टेक रहा था। हर चेहरे पर थकान के बावजूद संतोष और उत्साह था। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे स्वयं मां अपने भक्तों को शक्ति प्रदान कर रही हों।

इसी भीड़ में एक युवा भी था, जो मुंबई से आया था। वह एक बड़ी कंपनी में काम करता था, लेकिन जीवन की भागदौड़ में वह मानसिक तनाव से जूझ रहा था। उसने तय किया कि इस बार वह मां के दरबार में जाकर अपने मन की शांति खोजेगा। जब वह यात्रा पर निकला, तो उसे यह अंदाजा नहीं था कि यह यात्रा उसके जीवन को बदल देगी। रास्ते में उसे कई ऐसे लोग मिले, जो उससे भी ज्यादा कठिन परिस्थितियों में थे, लेकिन उनके चेहरे पर मुस्कान थी। यह देखकर उसे एहसास हुआ कि सच्ची खुशी बाहर नहीं, बल्कि भीतर होती है। मां के दरबार में पहुंचकर उसने केवल एक ही प्रार्थना की—"मां, मुझे संतोष दे दो।" और वह वहां से एक नए आत्मविश्वास के साथ लौटा।

यात्रा के दौरान एक और भावुक दृश्य देखने को मिला। एक मां अपने छोटे बच्चे को गोद में लेकर चढ़ाई कर रही थी। जब किसी ने उससे पूछा कि इतनी कठिन यात्रा में वह बच्चे को क्यों लेकर आई है, तो उसने कहा—"यह मेरा नहीं, मां का बच्चा है। मैं इसे उनके चरणों में अर्पित करने आई हूं।" उसके शब्दों में जो विश्वास था, वह हर किसी के दिल को छू गया।

भीड़ को देखते हुए प्रशासन ने यात्रा को अस्थायी रूप से रोकने का निर्णय लिया। पुलिस वाहनों के माध्यम से घोषणा की गई और श्रद्धालुओं से धैर्य बनाए रखने की अपील की गई। यह निर्णय भले ही आवश्यक था, लेकिन इसने भक्तों की परीक्षा भी ली। हजारों श्रद्धालु वहीं रुक गए, लेकिन किसी ने शिकायत नहीं की। वे वहीं बैठकर भजन-कीर्तन करने लगे, मां का नाम जपने लगे। यह दृश्य यह दर्शाता है कि सच्ची भक्ति किसी भी परिस्थिति में डगमगाती नहीं है।

रविवार सुबह 4 बजे से यात्रा को पुनः शुरू करने की घोषणा की गई। इस बीच, कटरा में एक अद्भुत आध्यात्मिक वातावरण बन गया। हर ओर भक्ति की ध्वनि गूंज रही थी। लोग एक-दूसरे की मदद कर रहे थे, भोजन बांट रहे थे, और मिलकर भजन गा रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो पूरा शहर एक परिवार बन गया हो।

इस बार नवरात्र के अवसर पर पवित्र शत चंडी महायज्ञ का आयोजन भी किया गया। यह यज्ञ केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक ऊर्जा का स्रोत है। वैदिक मंत्रों की गूंज और हवन की अग्नि ने पूरे वातावरण को दिव्यता से भर दिया। ऐसा विश्वास है कि इस यज्ञ से पूरे विश्व में शांति और समृद्धि का संचार होता है।

श्राइन बोर्ड ने श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए व्यापक इंतजाम किए थे। सुरक्षा के लिए कड़े प्रबंध किए गए थे, चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध थीं, और जगह-जगह विश्राम स्थल बनाए गए थे। इसके बावजूद, इतनी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के आने से कुछ चुनौतियां सामने आईं, लेकिन प्रशासन ने उन्हें कुशलता से संभाला।

इस यात्रा के दौरान एक बुजुर्ग संत का कथन सभी के लिए प्रेरणादायक बन गया। उन्होंने कहा—"मां के दरबार तक पहुंचने का रास्ता केवल पैरों से नहीं, बल्कि विश्वास से तय होता है।" उनके इस वाक्य ने हर श्रद्धालु को एक नई ऊर्जा दी।

चैत्र नवरात्र का यह पर्व हमें केवल पूजा-पाठ का ही नहीं, बल्कि आत्मचिंतन का भी अवसर देता है। यह वह समय है, जब हम अपने भीतर झांकते हैं और अपने जीवन के उद्देश्य को समझने का प्रयास करते हैं। मां वैष्णो देवी की यात्रा इसी आत्मिक यात्रा का प्रतीक है।

जब श्रद्धालु इस कठिन मार्ग को पार करते हैं, तो वे केवल एक मंदिर तक नहीं पहुंचते, बल्कि अपने भीतर की शक्ति को पहचानते हैं। वे समझते हैं कि जीवन की हर कठिनाई को पार किया जा सकता है, अगर हमारे भीतर विश्वास और धैर्य हो।

अंततः, 2026 का यह चैत्र नवरात्र हमें यह सिखाता है कि भक्ति केवल मंदिरों तक सीमित नहीं है। यह हमारे व्यवहार, हमारे विचार और हमारे कर्मों में भी दिखाई देती है। मां के दरबार में जाना केवल एक यात्रा नहीं, बल्कि एक अनुभव है, जो हमें जीवनभर के लिए बदल देता है।

जब लाखों लोग एक साथ 'जय माता दी' का उद्घोष करते हैं, तो वह केवल एक नारा नहीं होता, बल्कि वह एक ऊर्जा होती है, जो हर दिल को जोड़ती है। यही वह शक्ति है, जो हमें एक बनाती है, जो हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

और शायद यही कारण है कि हर वर्ष, हर नवरात्र में, लाखों लोग इस यात्रा पर निकल पड़ते हैं—क्योंकि उन्हें पता है कि मां का दरबार केवल एक स्थान नहीं, बल्कि एक एहसास है, एक विश्वास है, और एक ऐसी शक्ति है, जो हर कठिनाई को आसान बना देती है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002 and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

मार्च में सर्दी की वापसी: बारिश-बर्फबारी से बदला देश का मौसम, दिल्ली में टूटा 6 साल का रिकॉर्ड

(जीएनएस)। नई दिल्ली/लखनऊ। मार्च का महीना आमतौर पर गर्मी की दस्तक लेकर आता है, लेकिन इस बार मौसम ने ऐसा पलटा खाया कि सर्दी ने फिर से वापसी कर ली। देश की राजधानी दिल्ली समेत कई राज्यों में अचानक आई बारिश, तेज हवाओं और बादलों की सक्रियता ने तापमान को गिरा दिया है। हालात यह रहे कि दिल्ली में शुक्रवार का दिन पिछले छह वर्षों में मार्च का सबसे ठंडा दिन दर्ज किया गया। मौसम विभाग के अनुसार, शुक्रवार को दिल्ली के सफदरजंग वेधशाला में अधिकतम तापमान 21.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से काफी नीचे है। इससे पहले 8 मार्च 2020 को तापमान 21.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। यानी करीब छह साल बाद मार्च में ऐसी ठंड महसूस की गई। शनिवार के लिए न्यूनतम तापमान 14 डिग्री और अधिकतम 27 डिग्री सेल्सियस रहने का अनुमान जताया गया है, जबकि 23 मार्च को फिर हल्की बारिश की संभावना है।

इस बदले मौसम का एक सकारात्मक असर भी देखने को मिला है। बारिश के चलते दिल्ली की हवा साफ हो गई है और वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) गिरकर 93 पर पहुंच गया, जो संतोषजनक श्रेणी में आता है। करीब पांच महीने बाद लोगों को प्रदूषण से राहत मिली है और साफ हवा में सांस लेने का मौका मिला है।

मौसम में यह बदलाव केवल दिल्ली तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे उत्तर भारत में इसका असर देखा जा रहा है। पश्चिमी विक्षोभ के सक्रिय होने से पंजाब, हरियाणा और चंडीगढ़ में लगातार बारिश हुई, जिससे तापमान सामान्य से 7 से 10 डिग्री तक नीचे चला गया। चंडीगढ़ में अधिकतम तापमान 18.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो मार्च के लिहाज से काफी कम है।

उत्तर प्रदेश में भी मौसम ने अचानक करवट ली। लखनऊ समेत कई जिलों में तेज हवाओं और गरज-चमक के साथ बारिश हुई, जिससे तापमान में 5 से 7 डिग्री तक गिरावट आई। लखनऊ में शुक्रवार को अधिकतम तापमान 23.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से लगभग 10 डिग्री कम है। प्रदेश के 27 जिलों में भारी बारिश को लेकर ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है, जिससे प्रशासन सतर्क हो गया है।

अगर पहाड़ों की बात करें, तो वहां हालात और भी ज्यादा सर्द और चुनौतीपूर्ण हो गए हैं। हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के ऊंचाई वाले इलाकों में भारी बर्फबारी हुई है। मनाली, लाहौल-स्पीति और रोहतांग दर्रा में 90 से 120 सेंटीमीटर तक बर्फ जम चुकी है। कई स्थानों पर भूस्खलन के कारण सड़कें बंद कर दी गई हैं और प्रशासन ने आवाजाही पर रोक लगा दी है। उत्तराखंड के धार्मिक स्थलों केदारनाथ और बदरीनाथ में भी भारी हिमपात हुआ है, जहां चार फुट तक बर्फ गिरने की खबर है। इससे तीर्थ क्षेत्रों में ठंड और बढ़ गई है और हालात चुनौतीपूर्ण बने हुए हैं।

पूर्वोत्तर भारत में भी मौसम का असर साफ दिखाई दे रहा है। नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा में बारिश और तेज हवाओं का असर देखने को मिल सकता है। वहीं 24 मार्च को असम, मेघालय और अरुणाचल प्रदेश में भारी बारिश की संभावना जताई गई है।

पूर्वी और मध्य भारत के हिस्सों में भी मौसम का मिजाज बदला हुआ है। उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल और सिक्किम में 50-60 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलने के साथ बारिश हो सकती है। इसके अलावा ओडिशा और झारखंड में भी गरज-चमक के साथ बारिश के आसार हैं। दक्षिण भारत भी इस बदले मौसम से अछूता नहीं है। आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल और पुडुचेरी में हल्की बारिश और बिजली गिरने की संभावना जताई गई है।

पश्चिमी भारत में भी मौसम सक्रिय है। मध्य महाराष्ट्र में 21, 23 और 24 मार्च को गरज-चमक, तेज हवाओं और हल्की से मध्यम बारिश का अनुमान है। कुछ इलाकों में ओलावृष्टि की भी संभावना जताई गई है, जिससे किसानों की चिंता बढ़ सकती है।

मौसम विभाग का कहना है कि यह बदलाव पश्चिमी विक्षोभ के कारण हो रहा है, जो उत्तर भारत में सक्रिय है और इसके प्रभाव से पूरे देश के मौसम पर असर पड़ा है। इस प्रणाली के चलते अगले कुछ दिनों तक मौसम इसी तरह बना रह सकता है।

मार्च के इस असामान्य मौसम ने लोगों को हैरान कर दिया है। जहां एक ओर लोग गर्मी की तैयारी कर रहे थे, वहीं दूसरी ओर उन्हें फिर से ठंड का सामना करना पड़ रहा है। हालांकि, इस बदलाव ने प्रदूषण से राहत जरूर दी है, लेकिन किसानों, यात्रियों और आम जनजीवन पर इसका असर भी साफ दिखाई दे रहा है।

फिलहाल मौसम का यह बदला हुआ मिजाज देशभर में चर्चा का विषय बना हुआ है, और आने वाले दिनों में यह देखना दिलचस्प होगा कि यह ठंड और बारिश कितने समय तक बनी रहती है या फिर गर्मी एक बार फिर तेजी से वापसी करती है।

फरसा वाले बाबा की मौत के बाद मथुरा में भड़का आक्रोश, हालात संभालने उतरी सेना

(जीएनएस)। मथुरा। उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में एक सड़क हादसे ने ऐसा रूप ले लिया, जिसने पूरे इलाके को तनाव और उथल-पुथल में धकेल दिया। कोसीकलां थाना क्षेत्र में 'फरसा वाले बाबा' के नाम से पहचाने जाने वाले गौ सेवक चंद्रशेखर की दर्दनाक मौत के बाद लोगों का गुस्सा फूट पड़ा और देखते ही देखते हालात बेकाबू हो गए। स्थिति इतनी गंभीर हो गई कि प्रशासन को नियंत्रण के लिए सेना तक बुलानी पड़ी।

घटना शुक्रवार देर रात की है, जब घने कोहरे के बीच सड़क पर हुई एक दुर्घटना ने एक व्यक्ति की जान ले ली, लेकिन सुबह होते-होते यह हादसा आक्रोश और अफवाहों की आग में बदल गया। स्थानीय लोगों के बीच 'फरसा वाले बाबा' के नाम से प्रसिद्ध चंद्रशेखर इलाके में गौ सेवा और सामाजिक सक्रियता के कारण जाने जाते थे। उनकी अचानक मौत की खबर फैलते ही बड़ी संख्या में लोग घटनास्थल पर इकट्ठा हो गए। पुलिस के अनुसार, देर रात करीब तीन से चार बजे के बीच चंद्रशेखर ने एक संदिग्ध वाहन को रोकने की कोशिश की। उसी दौरान पीछे से आ रहे एक तेज रफ्तार ट्रक ने उन्हें टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि उनकी मौके पर ही मौत हो गई। जिस वाहन को रोकने की कोशिश की गई थी, उसकी तलाशी लेने पर उसमें किराने का सामान पाया गया, जबकि दुर्घटना में शामिल ट्रक राजस्थान नंबर का था और उसमें तार लदा हुआ था।

हालांकि, इस घटना को लेकर शुरुआत में कई तरह की आशंकाएं और अफवाहें फैल गईं। कुछ लोगों ने इसे गौतस्करी से जोड़कर देखा, जिससे माहौल और अधिक गरमा गया। इस पर स्थिति स्पष्ट करते हुए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्लोक कुमार ने कहा कि यह एक सामान्य सड़क दुर्घटना है और इसमें किसी प्रकार की गौतस्करी की पुष्टि नहीं हुई है। लेकिन तब तक हालात बिगड़ चुके थे। गुस्साए लोगों ने दिल्ली-आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग पर जाम लगा दिया। देखते ही देखते सड़क पर लंबी कतारें लग गईं और यातायात पूरी तरह ठप हो गया। करीब तीन घंटे तक यह प्रमुख राजमार्ग बंद रहा, जिससे हजारों यात्री प्रभावित हुए। आक्रोशित भीड़ ने पुलिस पर पथराव शुरू कर दिया। इस दौरान कई पुलिसकर्मी घायल हो गए और मौके पर खड़े कुछ वाहन भी क्षतिग्रस्त हो गए। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए पुलिस को बल प्रयोग करना पड़ा। पहले लाठीचार्ज किया गया, लेकिन जब भीड़ नहीं मानी तो आंसू गैस के गोले छोड़े गए। मौके पर पहुंचे वरिष्ठ अधिकारियों, जिनमें डीआईजी स्तर के अधिकारी भी शामिल थे, ने लोगों को समझाने की कोशिश की, लेकिन भीड़ का गुस्सा थमने का नाम नहीं ले रहा था। स्थिति लगातार गंभीर होती जा रही थी और प्रशासन के लिए चुनौती बढ़ती जा रही थी।

आखिरकार हालात को काबू में लाने के लिए सेना की मदद लेनी पड़ी। सेना के जवान मौके पर पहुंचे और उन्होंने मोर्चा संभालते हुए उपद्रवियों को खदेड़ना शुरू किया। सेना की सख्त कार्रवाई के बाद धीरे-धीरे भीड़ तितर-बितर हुई और हालात नियंत्रण में आने लगे। इसके बाद करीब तीन घंटे बाद जाकर दिल्ली-आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग पर यातायात बहाल हो सका।

इस घटना ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि कैसे एक सामान्य सड़क हादसा भीड़ के गुस्से और अफवाहों के कारण बड़े उपद्रव में बदल सकता है। स्थानीय स्तर पर भावनात्मक जुड़ाव और अचानक आई दुखद खबर ने लोगों को उग्र बना दिया, जिसका परिणाम कानून-व्यवस्था की स्थिति बिगड़ने के रूप में सामने आया।

घटना का संज्ञान लेते हुए योगी आदित्यनाथ ने अधिकारियों को तत्काल आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। उन्होंने साफ कहा है कि दोषियों के खिलाफ सख्त कदम उठाए जाएं और क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखी जाए।

पुलिस प्रशासन ने एहतियात के तौर पर इलाके में भारी पुलिस बल तैनात कर दिया है। संवेदनशील क्षेत्रों में लगातार निगरानी रखी जा रही है, ताकि किसी भी प्रकार की अफवाह या नई घटना को तुरंत नियंत्रित किया जा सके। साथ ही, लोगों से शांति बनाए रखने और अफवाहों पर ध्यान न देने की अपील की जा रही है।

ट्रक चालक और परिचालक के बारे में जानकारी मिली है कि वे राजस्थान के अलवर जिले के निवासी हैं। हादसे में चालक घायल हो गया, जिसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए कार्रवाई की जा रही है। यह घटना केवल एक दुर्घटना नहीं रही, बल्कि यह सामाजिक संवेदनशीलता, अफवाहों के प्रभाव और भीड़ की मनोवृत्ति का एक उदाहरण बन गई है। जब भावनाएं उफान पर होती हैं, तो छोटी सी चिंगारी भी बड़ा रूप ले सकती है। ऐसे में प्रशासन के साथ-साथ समाज की जिम्मेदारी भी बनती है कि वह संयम और समझदारी का परिचय दे।

मथुरा में हुई यह घटना यह भी दर्शाती है कि कानून-व्यवस्था बनाए रखना कितना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, खासकर तब जब भावनात्मक मुद्दे सामने हों। फिलहाल स्थिति नियंत्रण में है, लेकिन प्रशासन सतर्क है और किसी भी नई स्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार है।

सेवा और पारदर्शिता को नया आधार: वडोदरा में आधुनिक चैरिटी भवन का उद्घाटन

(जीएनएस)। वडोदरा। गुजरात की धरती पर प्रशासनिक सुधार और जनसेवा को सशक्त बनाने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम उस समय दर्ज हुआ, जब हर्षभाई संघवी ने वडोदरा शहर में नव-निर्मित आधुनिक चैरिटी भवन का उद्घाटन किया। यह अवसर केवल एक भवन के लोकार्पण तक सीमित नहीं था, बल्कि यह उस व्यापक सोच का प्रतीक था, जिसके तहत शासन व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, सुगम और जन-केंद्रित बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

पोलो ग्राउंड के सामने निर्मित इस भवन का दृश्य अपने आप में आधुनिकता और सुव्यवस्था का उदाहरण प्रस्तुत करता है। लगभग 4.12 करोड़ रुपये की लागत से तैयार यह भवन गुजरात सरकार के विधि विभाग के अंतर्गत पब्लिक ट्रस्ट रजिस्ट्रेशन कार्यालय और जॉइंट चैरिटी कमिश्नर कार्यालय के लिए विशेष रूप से बनाया गया है। अब तक जहां इन कार्यालयों से संबंधित कार्यों के लिए लोगों को विभिन्न स्थानों पर जाना पड़ता था, वहीं अब एक ही छत के नीचे सभी सुविधाएं उपलब्ध होंगी, जिससे समय और श्रम दोनों की बचत होगी।

उद्घाटन के बाद डिप्टी सीएम ने पूरे परिसर का बारीकी से निरीक्षण किया। उन्होंने न केवल भवन की संरचना और सुविधाओं का अवलोकन किया, बल्कि वहां मौजूद अधिकारियों से भी चर्चा कर यह सुनिश्चित किया कि आने वाले समय में यह भवन जनसेवा के लिए कितना प्रभावी साबित होगा। इस दौरान उन्होंने परिसर में वृक्षारोपण भी किया, जो यह दर्शाता है कि विकास के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को भी बराबर महत्व दिया जा रहा है।

इस अवसर पर डॉ. मनीषाबेन वकील और विधि विभाग के सचिव उपेंद्र एम. भट्ट की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा को और बढ़ा दिया। इनके अलावा जॉइंट चैरिटी

कमिश्नर योगिनीबेन सिम्पी, वरिष्ठ अधिकारी वनराजसिंह जेबलिया, डिप्टी सेक्रेटरी अमित गोहिल, डिविजनल ऑफिसर सुधांशु आचार्य तथा राज्य के विभिन्न चैरिटी कार्यालयों से जुड़े कई अधिकारी भी मौजूद रहे।

यह जी+2 मंजिला भवन कुल 1211.21 वर्ग मीटर क्षेत्र में विकसित किया गया है। इसकी डिजाइनिंग इस तरह की गई है कि यहां आने वाले नागरिकों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो। ग्राउंड फ्लोर पर पार्किंग और रिसेप्शन एरिया की व्यवस्था की गई है, जिससे आने वाले लोगों को शुरुआती स्तर पर ही मार्गदर्शन मिल सके। यह सुविधा खास तौर पर उन लोगों के लिए उपयोगी है, जो पहली बार यहां आते हैं और उन्हें प्रक्रियाओं की जानकारी नहीं होती।

भवन के प्रथम तल पर सहायक चैरिटी कमिश्नर का कार्यालय स्थापित किया गया है, जहां ट्रस्ट से जुड़े प्राथमिक स्तर के कार्यों का निष्पादन होगा। वहीं द्वितीय तल पर जॉइंट चैरिटी कमिश्नर का कार्यालय बनाया गया है, जहां महत्वपूर्ण निर्णय और उच्च स्तरीय प्रशासनिक कार्य किए जाएंगे। इस प्रकार भवन का हर हिस्सा सुव्यवस्थित और उद्देश्यपूर्ण तरीके से तैयार किया गया है।

इसके अलावा, भवन में आधुनिक कार्यालय कक्षों के साथ-साथ कोर्ट रूम, स्टाफ रूम, रिकॉर्ड रूम, प्रतीक्षालय और कॉन्फ्रेंस रूम जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध कराई गई हैं। यह सभी सुविधाएं प्रशासनिक कार्यों को अधिक प्रभावी और तेज बनाने में मदद करेंगी। खासकर कोर्ट रूम की व्यवस्था से ट्रस्ट से जुड़े मामलों का निपटारा यहीं पर आसानी से किया जा सकेगा, जिससे लोगों को अनावश्यक दौड़भाग से राहत मिलेगी।

जनसुविधा को ध्यान में रखते हुए भवन में पुरुष और महिला शौचालय के साथ-साथ दिव्यांगजनों के लिए पृथक शौचालय की व्यवस्था की गई है। लिफ्ट की सुविधा से बुजुर्गों और दिव्यांगजनों को ऊपरी मंजिलों तक पहुंचने में कोई परेशानी नहीं होगी। इसके अलावा वॉटर कूलर रूम जैसी सुविधाएं भी सुनिश्चित की गई हैं, जिससे यहां आने वाले लोगों को बुनियादी सुविधाएं सहज रूप से मिल सकें।

सुरक्षा के दृष्टिकोण से भी इस भवन को अत्याधुनिक बनाया गया है। इसमें फायर सेफ्टी सिस्टम लगाया गया है, जो किसी भी आपात स्थिति में त्वरित प्रतिक्रिया देने में सक्षम है। इसके साथ ही रेन वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम भी स्थापित किया गया है, जो जल संरक्षण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह पहल न केवल पर्यावरण के लिए लाभकारी है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए संसाधनों के संरक्षण का संदेश भी देती है।

कैंपस विकास के अंतर्गत गार्डन एरिया, सीसी रोड, पंप एवं सम्प रूम, सुरक्षा केबिन, मुख्य प्रवेश द्वार और कंपाउंड वॉल का निर्माण भी किया जा रहा है। यह सभी व्यवस्थाएं मिलकर इस परिसर को एक आदर्श प्रशासनिक केंद्र के रूप में विकसित करती हैं, जहां कार्यकुशलता और सुविधा दोनों का संतुलन दिखाई देता है।

इस अवसर पर अपने संबोधन में डिप्टी सीएम हर्षभाई संघवी ने कहा कि राज्य सरकार का लक्ष्य है कि नागरिकों को अधिक से अधिक पारदर्शी और सरल सेवाएं उपलब्ध कराई जाएं। उन्होंने विश्वास जताया कि यह नया चैरिटी भवन ट्रस्ट से जुड़े कार्यों को आसान बनाएगा और लोगों को समय पर न्याय और सुविधा प्रदान करेगा।

उन्होंने यह भी कहा कि गुजरात सरकार लगातार ऐसे प्रोजेक्ट्स पर काम कर रही है, जो सीधे तौर पर जनता के जीवन को सरल बनाते हैं। यह भवन उसी दिशा में एक मजबूत कदम है, जो प्रशासन और जनता के बीच की दूरी को कम करेगा और भरोसे को मजबूत बनाएगा।

वडोदरा में इस भवन का उद्घाटन केवल एक स्थानीय घटना नहीं, बल्कि यह पूरे राज्य के लिए एक उदाहरण है कि किस तरह आधुनिक तकनीक और सुव्यवस्थित योजना के माध्यम से प्रशासनिक ढांचे को बेहतर बनाया जा सकता है। आने वाले समय में यह भवन न केवल ट्रस्ट से जुड़े कार्यों का केंद्र बनेगा, बल्कि जनसेवा और पारदर्शिता का प्रतीक भी साबित होगा।

इस प्रकार, यह नया चैरिटी भवन विकास, सुशासन और जनहित के समन्वय का जीवंत उदाहरण बनकर उभरा है, जो आने वाले वर्षों में हजारों लोगों के लिए सुविधा और भरोसे का केंद्र बनेगा।

ग्रामीण विकास की नब्ज पर सरकार: राजकोट में मंत्री बावलिया का अचानक दौरा, परियोजनाओं की हकीकत परखी

(जीएनएस)। राजकोट। गुजरात में जमीनी स्तर पर विकास कार्यों की गति और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए सरकार अब सीधे मैदान में उतरकर हालात पर नजर रख रही है। इसी कड़ी में कैबिनेट मंत्री कुंवरजीभाई बावलिया ने राजकोट जिले के जसदण और गोंडल तालुका में चल रहे विभिन्न विकास कार्यों का औचक निरीक्षण कर प्रशासनिक तंत्र को स्पष्ट संदेश दिया कि विकास केवल कागजों में नहीं, जमीन पर दिखाई देना चाहिए। मंत्री का यह दौरा पूरी तरह से सरप्राइज था, जिससे अधिकारियों और ठेकेदारों में हलचल मच गई। बिना पूर्व सूचना के पहुंचे मंत्री बावलिया ने सीधे निर्माण स्थलों पर जाकर काम की वास्तविक स्थिति को देखा और संबंधित अधिकारियों से मौके पर ही जवाब-तलब किया। इस तरह के निरीक्षणों का उद्देश्य यही होता है कि योजनाओं में पारदर्शिता बनी रहे और जनता को समय पर बेहतर सुविधाएं मिल सकें।

दौरे की शुरुआत जसदण तालुका के कानपर गांव से हुई, जहां करीब एक करोड़ रुपये की लागत से जसापर-कानपर पुल का निर्माण कार्य चल रहा है। यह पुल स्थानीय लोगों के लिए बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके बन जाने से आवागमन आसान होगा और आसपास के गांवों के बीच संपर्क मजबूत होगा। मंत्री ने निर्माण स्थल पर पहुंचकर न केवल कार्य की प्रगति देखी, बल्कि गुणवत्ता की भी गहन जांच की।

उन्होंने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि कार्य में किसी प्रकार की लापरवाही या समझौता बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। समयसीमा का पालन करते हुए उच्च गुणवत्ता के साथ निर्माण कार्य पूरा किया जाए, ताकि जनता को लंबे समय तक इसका

लाभ मिल सके। मंत्री ने यह भी कहा कि अधूरे या खराब गुणवत्ता वाले कार्य विकास की अवधारणा को कमजोर करते हैं, इसलिए हर स्तर पर जिम्मेदारी तय होनी चाहिए।

इसके बाद मंत्री बावलिया गोंडल तालुका के मोटा दड़वा गांव पहुंचे, जहां बाढ़ से बचाव के लिए सुरक्षा दीवार का निर्माण किया जा रहा है। यह परियोजना ग्रामीणों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि हर साल मानसून के दौरान इस क्षेत्र में जलभराव और बाढ़ की समस्या उत्पन्न होती है। मंत्री ने मौके पर जाकर निर्माण कार्य का निरीक्षण किया और अधिकारियों को निर्देश दिया कि इस परियोजना को प्राथमिकता के आधार पर पूरा किया जाए, ताकि आने वाले मानसून से पहले ही लोगों को राहत मिल सके।

मंत्री ने यह भी जोर दिया कि केवल निर्माण करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना भी जरूरी है कि संरचना टिकाऊ और मजबूत हो, जिससे लंबे समय तक सुरक्षा प्रदान की जा सके। उन्होंने तकनीकी पहलुओं पर भी चर्चा की और अधिकारियों से नियमित निगरानी बनाए रखने को कहा।

इसी दौरे के दौरान मंत्री बावलिया ने मोटा दड़वा गांव में 12 लाख रुपये की लागत से बनने वाली आंगनवाड़ी भवन का विधिवत शिलान्यास भी किया। यह आंगनवाड़ी केंद्र गांव के बच्चों और महिलाओं के लिए एक महत्वपूर्ण सुविधा साबित होगा। यहां बच्चों को पोषण, प्रारंभिक शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं मिलेंगी, वहीं महिलाओं के लिए भी विभिन्न योजनाओं का लाभ उपलब्ध होगा।

शिलान्यास कार्यक्रम के दौरान स्थानीय जनप्रतिनिधि और ग्रामीण बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। सरपंच भूपतभाई वाला, मुख्य सेविका नयनाबेन मेहता, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और गांव के अन्य लोग इस अवसर के साक्षी बने। ग्रामीणों ने मंत्री के इस दौरे का स्वागत किया और उम्मीद जताई कि इससे क्षेत्र में विकास कार्यों को नई गति मिलेगी।

मंत्री बावलिया ने अपने संबोधन में कहा कि राज्य सरकार ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र विकास के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि सड़क, पुल, सुरक्षा दीवार और आंगनवाड़ी जैसी बुनियादी सुविधाएं किसी भी गांव के विकास की नींव होती हैं। सरकार का लक्ष्य है कि हर गांव तक ये सुविधाएं पहुंचे और लोगों का जीवन स्तर बेहतर हो।

उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि सरकार केवल योजनाएं बनाकर नहीं रुकती, बल्कि उनके प्रभावी क्रियान्वयन पर भी उतना ही ध्यान देती है। इसी उद्देश्य से ऐसे सरप्राइज दौरे किए जाते हैं, ताकि वास्तविक स्थिति का आकलन किया जा सके और जहां भी कमी हो, उसे तुरंत दूर किया जा सके।

इस पूरे दौरे ने यह संदेश दिया कि अब विकास कार्यों में लापरवाही की कोई गुंजाइश नहीं है। प्रशासनिक अधिकारी और ठेकेदार दोनों ही इस बात से अवगत हैं कि सरकार सीधे निगरानी कर रही है और किसी भी प्रकार की ढिलाई पर सख्त कार्रवाई हो सकती है।

वायरल वीडियो से फैली दहशत पर प्रशासन का विराम: विक्रमशिला सेतु पूरी तरह सुरक्षित

(जीएनएस)। भागलपुर। सोशल मीडिया के दौर में एक वीडियो कितनी तेजी से भ्रम फैला सकता है, इसका ताजा उदाहरण विक्रमशिला सेतु को लेकर सामने आया, जहां एक कथित घटना के बाद लोगों में चिंता और आशंका का माहौल बन गया। लेकिन प्रशासन ने त्वरित कार्रवाई करते हुए स्थिति स्पष्ट कर दी है कि सेतु पूरी तरह सुरक्षित है और इसके मुख्य ढांचे को किसी प्रकार का कोई नुकसान नहीं पहुंचा है। हाल के दिनों में एक वीडियो तेजी से वायरल हुआ, जिसमें यह दावा किया गया कि विक्रमशिला सेतु के नीचे की संरचना का हिस्सा नदी में गिर गया है। इस वीडियो के सामने आते ही स्थानीय लोगों और यात्रियों के बीच डर का माहौल बन गया। पुल की मजबूती और सुरक्षा को लेकर तरह-तरह की चर्चाएं शुरू हो गईं, जिससे प्रशासन के सामने स्थिति स्पष्ट करना जरूरी हो गया।

इसी के चलते सदर अनुमंडल पदाधिकारी विकास कुमार ने बिना देर किए पुल निर्माण निगम के अभियंताओं के साथ मौके पर पहुंचकर विस्तृत निरीक्षण किया। उन्होंने सेतु के विभिन्न हिस्सों की तकनीकी जांच कराई और पूरी संरचना का बारीकी से आकलन किया। निरीक्षण के बाद उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि पुल के मुख्य ढांचे में कोई भी तकनीकी खामी या क्षति नहीं पाई गई है।

उन्होंने बताया कि जो हिस्सा गिरने की बात कही जा रही है, वह दरअसल सेतु की स्थायी संरचना का हिस्सा ही नहीं था। निर्माण के दौरान नदी के प्रवाह और पानी के दबाव को नियंत्रित करने के लिए अस्थायी रूप से कुछ 'फॉल्स दीवारें' बनाई जाती हैं। ये दीवारें केवल निर्माण कार्य को सुरक्षित और सुचारू बनाने के लिए होती हैं और इनका पुल की स्थायी मजबूती से कोई सीधा संबंध नहीं होता। अधिकारियों के अनुसार, निर्माण कार्य पूरा होने के बाद इन अस्थायी दीवारों को हटाया जाना था, लेकिन कुछ स्थानों पर ये दीवारें पूरी तरह हटाई नहीं जा सकीं। समय के साथ इनमें से एक दीवार कमजोर होकर नदी में गिर गई, जिसे लेकर भ्रम की स्थिति पैदा हो गई। लेकिन इसका पुल के मुख्य पिलर या संरचना से कोई लेना-देना नहीं है।

एसडीओ विकास कुमार ने यह भी स्पष्ट किया कि सोशल मीडिया और कुछ टीवी चैनलों पर जो यह खबर चलाई जा रही है कि सेतु के पाया संख्या 19 को नुकसान पहुंचा है, वह पूरी तरह गलत और भ्रामक है। उन्होंने कहा कि इस तरह की अपुष्ट खबरें लोगों में अनावश्यक डर फैलाती हैं और इससे जनजीवन प्रभावित होता है।

प्रशासन ने यह भी बताया कि जो अस्थायी दीवार अभी क्षतिग्रस्त हुई है, उसे जल्द ही पूरी तरह हटाने की प्रक्रिया शुरू की जाएगी, ताकि भविष्य में इस तरह की कोई स्थिति उत्पन्न न हो। साथ ही, सेतु की नियमित निगरानी और रखरखाव भी जारी रहेगा।

इस पूरे घटनाक्रम ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि सोशल मीडिया पर वायरल होने वाली हर जानकारी सही नहीं होती। कई बार अधूरी या गलत जानकारी लोगों के बीच तेजी से फैल जाती है, जिससे अनावश्यक भय और भ्रम की स्थिति पैदा हो जाती है। ऐसे में प्रशासन और संबंधित विभागों की जिम्मेदारी बढ़ जाती है कि वे समय पर सही जानकारी देकर स्थिति स्पष्ट करें। विक्रमशिला सेतु भागलपुर और आसपास के क्षेत्रों के लिए एक महत्वपूर्ण जीवनरेखा है। इस पुल के माध्यम से हजारों लोग रोजाना आवागमन करते हैं और यह क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के लिए भी बेहद अहम है।

हाई-टेक सुरक्षा की ओर कदम: सूरत में 'स्मार्ट कैंपस मुहिम' से छात्रों को मिलेगा डिजिटल कवच

(जीएनएस)। सूरत। बदलते दौर में जहां तकनीक हर क्षेत्र को नई दिशा दे रही है, वहीं अब शिक्षा और छात्र सुरक्षा के क्षेत्र में भी एक बड़ा बदलाव देखने को मिल रहा है। सूरत से एक महत्वपूर्ण पहल सामने आई है, जहां सड़क सुरक्षा और स्मार्ट मोबिलिटी के क्षेत्र में कार्यरत अग्रणी संस्था इको भारत ने अपनी महत्वाकांक्षी 'स्मार्ट कैंपस मुहिम' को नई गति देने के लिए ललिता शर्मा को मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) नियुक्त किया है। यह नियुक्ति तत्काल प्रभाव से लागू कर दी गई है और इसे संस्था की रणनीतिक दिशा में एक अहम कदम माना जा रहा है।

आज के समय में स्कूल जाने वाले बच्चों की सुरक्षा एक बड़ी चिंता बनकर उभरी है। खासकर स्कूली बसों और परिवहन व्यवस्था में लापरवाही के कारण कई घटनाएं सामने आती रही हैं। ऐसे में 'स्मार्ट कैंपस मुहिम' एक ऐसी पहल के रूप में सामने आई है, जो तकनीक के माध्यम से छात्रों की सुरक्षा को मजबूत करने का प्रयास कर रही है।

ललिता शर्मा की नियुक्ति को केवल एक प्रशासनिक बदलाव नहीं, बल्कि एक विजनरी कदम के रूप में देखा जा रहा है। उन्हें स्मार्ट मोबिलिटी और तकनीक-आधारित समाधान के क्षेत्र में अनुभव प्राप्त है, जिससे यह उम्मीद जताई जा रही है कि उनके नेतृत्व में यह अभियान नई ऊंचाइयों तक पहुंचेगा। इको भारत के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स ने भी इस बात पर जोर दिया कि यह पहल केवल तकनीकी सुधार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आने वाली पीढ़ी की सुरक्षा के प्रति एक गहरी प्रतिबद्धता

को दर्शाती है।

इस मुहिम के तहत सबसे महत्वपूर्ण बदलाव स्कूली परिवहन व्यवस्था में देखने को मिलेगा। अब स्कूल बसों और वाहनों को RFID (रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन) और GPS (ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम) जैसी आधुनिक तकनीकों से लैस किया जाएगा। इससे छात्रों की रियल-टाइम ट्रैकिंग संभव हो सकेगी, यानी अभिभावक यह जान सकेंगे कि उनका बच्चा कहां है, कब स्कूल पहुंचा और कब घर लौट रहा है।

इसके अलावा, ऑटोमेटेड बस अटेंडेंस सिस्टम भी लागू किया जाएगा, जिससे हर छात्र की उपस्थिति का डिजिटल रिकॉर्ड तैयार होगा। इससे न केवल सुरक्षा बढ़ेगी, बल्कि प्रशासनिक कार्यों में भी पारदर्शिता आएगी। अगर कोई छात्र बस में नहीं चढ़ता या बीच रास्ते में उतरता है, तो उसकी जानकारी तुरंत संबंधित अधिकारियों और अभिभावकों तक पहुंच सकेगी।

'स्मार्ट कैंपस मुहिम' का एक और महत्वपूर्ण पहलू डेटा-आधारित सड़क सुरक्षा प्रोटोकॉल का विकास है। इसके तहत सड़क पर होने वाली गतिविधियों, ट्रैफिक पैटर्न और संभावित जोखिमों का विश्लेषण कर ऐसे उपाय तैयार किए जाएंगे, जिससे दुर्घटनाओं की संभावना को कम किया जा सके। यह पहल केवल प्रतिक्रिया देने तक सीमित नहीं होगी, बल्कि संभावित खतरों को पहले से पहचानकर उन्हें टालने की दिशा में काम करेगी।

ललिता शर्मा के नेतृत्व में इस मुहिम का एक और महत्वपूर्ण लक्ष्य शैक्षणिक संस्थानों में सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। छात्रों, अभिभावकों और स्कूल प्रशासन को यह समझाना जरूरी है कि सुरक्षा केवल तकनीक से नहीं, बल्कि सामूहिक जिम्मेदारी से सुनिश्चित होती है। इसके लिए विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम, वर्कशॉप और प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए जाएंगे। यह पहल विशेष रूप से उन शहरी क्षेत्रों के लिए महत्वपूर्ण है, जहां ट्रैफिक की समस्या अधिक है और स्कूली बच्चों को रोजाना जोखिम भरे रास्तों से गुजरना पड़ता है। सूरत जैसे तेजी से विकसित हो रहे शहर में इस तरह की तकनीक आधारित पहल न केवल समय की मांग है, बल्कि यह एक मॉडल के रूप में भी उभर सकती है, जिसे देश के अन्य शहरों में भी लागू किया जा सके। इको भारत का यह कदम 'स्मार्ट सिटी' की अवधारणा के साथ भी जुड़ा हुआ है, जहां तकनीक के माध्यम से नागरिकों के जीवन को सुरक्षित और सुविधाजनक बनाया जाता है। 'स्मार्ट कैंपस मुहिम' इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कड़ी साबित हो सकती है।

एआई की पैनी नजर से नाकाम हुई चोरी की साजिश जयपुर में कथा स्थल से 14 बदमाश गिरफ्तार

(जीएनएस)। जयपुर। आस्था के महासमागम में जहां हजारों श्रद्धालु भक्ति में लीन थे, वहीं भीड़ का फायदा उठाकर वारदात को अंजाम देने की फिराक में पहुंचे एक संगठित गिरोह को पुलिस ने ऐसी मुस्तैदी से पकड़ा कि यह मामला तकनीक और सुरक्षा के संगम का बड़ा उदाहरण बन गया। जयपुर में आयोजित शिव महापुराण कथा के दौरान एआई तकनीक से लैस कैमरों ने पलक झपकते ही 14 बदमाशों की पहचान कर ली और पुलिस ने घेराबंदी कर सभी को मौके से दबोच लिया।

घटना मानसरोवर के शिप्रापथ इलाके की है, जहां शुक्रवार से शिव महापुराण कथा का भव्य आयोजन शुरू हुआ। इस धार्मिक आयोजन में 50 से 60 हजार से अधिक श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना को देखते हुए प्रशासन ने सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए थे। भारी पुलिस बल की तैनाती के साथ-साथ पहली बार इतने बड़े स्तर पर एआई तकनीक का इस्तेमाल किया गया, जिसने अपनी प्रभावशीलता भी साबित कर दी।

कथा स्थल पर बनाए गए हाईटेक कंट्रोल रूम से पूरे आयोजन पर नजर रखी जा रही थी। यहां लगे एआई कैमरे न केवल भीड़ की गतिविधियों को रिकॉर्ड कर रहे थे, बल्कि संदिग्ध गतिविधियों की पहचान भी कर रहे थे। इसी दौरान कंट्रोल रूम में मौजूद टीम ने भीड़ में असामान्य हरकतें कर रहे कुछ लोगों को नोटिस किया। ये लोग जानबूझकर धक्का-मुक्की कर रहे थे और श्रद्धालुओं के करीब जाने की कोशिश कर रहे थे।

एआई कैमरों ने इन संदिग्धों के चेहरे को तुरंत पुलिस के डेटाबेस से मिलाया। कुछ ही क्षणों में यह स्पष्ट हो गया कि ये लोग पहले भी चोरी और चेन स्नेचिंग जैसी वारदातों में शामिल रह चुके हैं। जैसे ही यह पुष्टि हुई, कंट्रोल रूम से तुरंत मौके पर तैनात पुलिस टीम को अलर्ट भेजा गया। निर्देश मिलते ही पुलिसकर्मियों ने पूरी रणनीति के साथ घेराबंदी की और एक साथ 14 लोगों को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार किए गए आरोपियों में 11 महिलाएं और 3 पुरुष शामिल हैं, जो भरतपुर और हनुमानगढ़ के रहने वाले बताए जा रहे हैं। यह गिरोह लंबे समय से धार्मिक आयोजनों, मेलों और भीड़भाड़ वाले कार्यक्रमों को अपना निशाना बनाता था।

पुलिस के अनुसार, यह गिरोह बेहद शातिर तरीके से काम करता था। भीड़ का फायदा उठाकर ये लोग लोगों के मोबाइल फोन और गले की चेन पर हाथ साफ कर देते थे और पलक झपकते ही मौके से फरार हो जाते थे। खास बात यह थी कि गिरोह में बड़ी संख्या में महिलाओं को शामिल किया गया था, ताकि लोगों को शक न हो और वे आसानी से भीड़ में घुल-मिल सकें।

इस पूरे ऑपरेशन में एआई तकनीक की भूमिका सबसे अहम रही। यदि पारंपरिक तरीके से निगरानी की जाती, तो इतनी बड़ी भीड़ में इन आरोपियों को पहचानना बेहद मुश्किल होता। लेकिन एआई कैमरों ने संदिग्ध गतिविधियों को तुरंत चिन्हित किया और चेहरे की पहचान कर अपराधियों की पुष्टि कर दी। इससे पुलिस को तुरंत कार्रवाई करने में मदद मिली और एक बड़ी वारदात होने से पहले ही उसे टाल दिया गया। राज ऋषि राज, डीसीपी साउथ ने बताया कि कथा स्थल पर सुरक्षा को लेकर विशेष इंतजाम किए गए थे। एआई तकनीक से लैस कैमरों के साथ एक अत्याधुनिक कंट्रोल रूम बनाया गया था, जहां से हर गतिविधि पर नजर रखी जा रही थी। उन्होंने कहा कि इस तकनीक की मदद से अपराधियों की पहचान करना और उन्हें पकड़ना काफी आसान हो गया है।

उन्होंने यह भी बताया कि शिव महापुराण कथा 26 मार्च तक चलेगी और इस दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के आने की उम्मीद है। ऐसे में सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत किया गया है, ताकि किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना को रोका जा सके। पुलिस लगातार सतर्क है और हर संदिग्ध गतिविधि पर नजर रखी जा रही है।

इस घटना ने यह साबित कर दिया है कि आधुनिक तकनीक का सही उपयोग कानून-व्यवस्था को मजबूत करने में कितना कारगर हो सकता है। एआई कैमरों के जरिए न केवल अपराध को रोका जा सकता है, बल्कि अपराधियों को मौके पर ही पकड़ना भी संभव हो गया है।

जयपुर पुलिस की इस कार्रवाई की सराहना की जा रही है, क्योंकि उन्होंने न केवल श्रद्धालुओं की सुरक्षा सुनिश्चित की, बल्कि एक सक्रिय गिरोह का पर्दाफाश भी किया। यह कदम भविष्य में होने वाले बड़े आयोजनों के लिए एक मिसाल बन सकता है, जहां तकनीक और सतर्कता मिलकर सुरक्षा को नए स्तर तक ले जा सकती है। भक्ति और आस्था के इस माहौल में जहां लोग भगवान शिव की कथा सुनने पहुंचे थे, वहीं पुलिस की इस सतर्कता ने यह सुनिश्चित किया कि कोई भी असामाजिक तत्व इस पवित्र आयोजन को नुकसान न पहुंचा सके। यह घटना बताती है कि अब अपराधियों के लिए भीड़ में छिपना उतना आसान नहीं रह गया है, क्योंकि तकनीक की नजर हर जगह मौजूद है।

रिश्तों का खून: झारखंड में बेटे ने पिता की ली जान, सौतेली मां भी जिंदगी से जूझ रही

(जीएनएस)। पश्चिम सिंहभूम। परिवार, जहां प्रेम, सहारा और विश्वास की नींव होती है, वहीं कभी-कभी वही घर हिंसा और त्रासदी का केंद्र बन जाता है। झारखंड के पश्चिम सिंहभूम जिले से सामने आई एक घटना ने रिश्तों की इस सच्चाई को झकझोर कर रख दिया है, जहां एक मामूली विवाद ने इतना भयावह रूप ले लिया कि बेटे ने अपने ही पिता की बेरहमी से हत्या कर दी और बीच-बचाव करने आई सौतेली मां को भी गंभीर रूप से घायल कर दिया।

यह दिल दहला देने वाली घटना कुमारडुंगी थाना क्षेत्र के बाईहातू गांव की है। यहां रहने वाले सत्यवान पान और उनके बेटे प्रकाश पान के बीच घर के आंगन में नए मकान के निर्माण को लेकर विवाद शुरू हुआ। शुरुआत में यह महज एक सामान्य पारिवारिक बहस थी, लेकिन देखते ही देखते हालात इतने बिगड़ गए कि गुस्सा हिंसा में बदल गया।

बताया जा रहा है कि नए घर के लिए जगह के चयन को लेकर पिता-पुत्र के बीच कहासुनी हुई। दोनों अपने-अपने पक्ष पर अड़े रहे और विवाद बढ़ता चला गया। इसी दौरान गुस्से में आकर प्रकाश पान ने पास में रखा डंडा उठा लिया और अपने पिता पर ताबड़तोड़ हमला कर दिया। हमला इतना निर्मम था कि सत्यवान पान ने मौके पर ही दम तोड़ दिया।

घटना के दौरान जब सौतेली मां यशोदा देवी ने बीच-बचाव करने की कोशिश की, तो आरोपी ने उन्हें भी नहीं बख्शा। उन पर भी जानलेवा हमला किया गया, जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गईं। परिजनों और स्थानीय लोगों की मदद से उन्हें तुरंत अस्पताल पहुंचाया गया। फिलहाल उनका

इलाज चाईबासा सदर अस्पताल में चल रहा है, जहां उनकी हालत नाजुक बताई जा रही है।

घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। साथ ही आरोपी की गिरफ्तारी के लिए इलाके में सघन तलाशी अभियान शुरू कर दिया गया है। फिलहाल प्रकाश पान फरार बताया जा रहा है और उसकी तलाश जारी है।

पुलिस अधिकारियों के अनुसार, यह पूरी घटना एक पारिवारिक विवाद का नतीजा है, जो अचानक हिंसक रूप ले बैठा। हालांकि, इस घटना ने पूरे इलाके को स्तब्ध कर दिया है। स्थानीय लोगों के बीच भय और आक्रोश का माहौल है, क्योंकि किसी ने भी नहीं सोचा था कि एक छोटा सा विवाद इतना बड़ा और खतरनाक रूप ले सकता है।

यह घटना केवल एक परिवार की त्रासदी नहीं है, बल्कि यह समाज के लिए भी एक गंभीर चेतावनी है। आज के समय में बढ़ते तनाव, असहिष्णुता और गुस्से पर नियंत्रण न होने के कारण ऐसे मामले सामने आ रहे हैं, जहां अपने ही लोग एक-दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं।

गौरतलब है कि इस तरह की घटनाएं पहले भी सामने आ चुकी हैं। राजधानी रांची के दशम फॉल थाना क्षेत्र के काजीबारू गांव में भी कुछ समय पहले इसी तरह की एक दर्दनाक वारदात हुई थी, जहां एक युवक ने शराब के लिए पैसे न मिलने पर अपने ही पिता की कुल्हाड़ी से हत्या कर दी थी। इस तरह की घटनाएं यह दर्शाती हैं कि पारिवारिक विवाद और व्यक्तिगत तनाव किस तरह से खतरनाक रूप ले सकते हैं।

विशेषज्ञों का मानना है कि इस तरह की घटनाओं के पीछे कई सामाजिक और मानसिक कारण हो सकते हैं, जिनमें आर्थिक दबाव, पारिवारिक तनाव, नशे की लत और संवाद की कमी प्रमुख हैं। जब इन समस्याओं का समय पर समाधान नहीं होता, तो वे धीरे-धीरे गुस्से और हिंसा में बदल जाती हैं। इस घटना के बाद एक बार फिर यह सवाल खड़ा हो गया है कि क्या हम अपने परिवारों में संवाद और समझदारी को बनाए रखने में असफल हो रहे हैं? क्या छोटी-छोटी बातों को सुलझाने के बजाय हम उन्हें इतना बढ़ा देते हैं कि वे जानलेवा बन जाती हैं?

फिलहाल पुलिस आरोपी की तलाश में जुटी हुई है और जल्द ही उसे गिरफ्तार करने की उम्मीद जताई जा रही है। लेकिन इस घटना ने एक परिवार को हमेशा के लिए तोड़ दिया और समाज के सामने एक कड़वी सच्चाई रख दी—कि जब गुस्सा और असहिष्णुता हावी हो जाए, तो रिश्तों की सबसे मजबूत डोर भी टूट सकती है।

बिहार में मौसम का तांडव: आंधी, बारिश और वज्रपात से चार की मौत, किसानों पर टूटा कहर

(जीएनएस)। पटना। मौसम का मिजाज जब अचानक बदलता है, तो उसका असर केवल तापमान तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह जनजीवन, खेती और लोगों की सुरक्षा तक को गहराई से प्रभावित कर देता है। बिहार में शुक्रवार देर रात ऐसा ही भयावह दृश्य देखने को मिला, जब तेज आंधी, मूसलाधार बारिश और वज्रपात ने मिलकर पूरे राज्य में तबाही मचा दी। इस प्राकृतिक कहर ने जहां चार लोगों की जान ले ली, वहीं किसानों की मेहनत पर भी पानी फेर दिया।

राजधानी पटना समेत राज्य के करीब 13 जिलों में तेज हवाओं और बारिश ने अचानक दस्तक दी। दिनभर सामान्य रहे मौसम ने शाम होते-होते विकराल रूप धारण कर लिया। तेज हवाओं की रफ्तार, आसमान से गिरती बिजली और ओलावृष्टि ने मिलकर ऐसा माहौल बना दिया कि लोग अपने घरों में कैद होने को मजबूर हो गए। इस प्राकृतिक आपदा का सबसे दुखद पहलू जानमाल का नुकसान रहा। गया जिले में वज्रपात की चपेट में आने से दो लोगों की मौत हो गई। मृतकों की पहचान वजीरगंज के कोल्हना गांव निवासी मनोज सिंह (50) और डुमरिया क्षेत्र के महेंद्र यादव (55) के रूप में हुई है। दोनों ही अपने-अपने काम में लगे हुए थे, तभी अचानक गिरी आकाशीय बिजली ने उनकी जान ले ली।

वहीं अररिया जिले में आंधी और ओलावृष्टि ने अलग ही कहर बरपाया। फारबिसगंज क्षेत्र में तेज हवा और बारिश के कारण एक

फूस का घर भरभराकर गिर पड़ा, जिसमें तीन साल के मासूम शिवम राय की मौके पर ही मौत हो गई। इस हादसे में तीन अन्य बच्चे गंभीर रूप से घायल हो गए, जिन्हें तत्काल इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। इसी जिले के दरभंगिया टोला में एक और दर्दनाक घटना सामने आई, जहां पुरानी चहारदीवारी गिरने से 8 वर्षीय मंतसीर की मौत हो गई। इस हादसे में भी दो अन्य बच्चे घायल हो गए, जिनका इलाज पूर्णिया के एक निजी अस्पताल में चल रहा है। इन घटनाओं ने पूरे इलाके में मातम का माहौल बना दिया है। इस प्राकृतिक आपदा का सबसे बड़ा असर किसानों पर पड़ा है। रबी सीजन की तैयार खड़ी फसलें, जिनके सहारे किसान अपनी सालभर की आजीविका की उम्मीद लगाए बैठे थे, वह तेज आंधी और ओलावृष्टि की भेंट चढ़ गईं। खासकर गेहूं की फसल को बड़े पैमाने पर नुकसान पहुंचा है। खेतों में खड़ी फसलें जमीन पर बिछ गईं, जिससे किसानों की महीनों की मेहनत पलभर में बर्बाद हो गई।

कई जगहों पर ओलावृष्टि इतनी तेज थी कि उसने फसलों को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। किसानों के लिए यह स्थिति किसी आपदा से कम नहीं है, क्योंकि उनकी आय का मुख्य स्रोत ही खत्म हो गया है। अब वे सरकार से मुआवजे और सहायता की उम्मीद लगाए बैठे हैं।

मौसम विभाग के अनुसार, इस अचानक बदलाव के पीछे बंगाल की खाड़ी से आ रही नमी और एक सक्रिय ट्रफ लाइन जिम्मेदार है। दिन के समय बढ़ती गर्मी के कारण वातावरण में अस्थिरता पैदा हो रही है, जिससे शाम के समय तेज आंधी और बारिश की स्थिति बन रही है। पिछले 24 घंटों में यही पैटर्न देखने को मिला, जहां सुबह मौसम सामान्य रहा, लेकिन शाम होते-होते हालात बिगड़ गए।

तापमान में भी इस बदलाव का असर साफ देखा गया। कैमूर में अधिकतम तापमान 36.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि राजगीर राज्य का सबसे ठंडा स्थान रहा, जहां तापमान 18 डिग्री सेल्सियस तक गिर गया। यह अंतर दर्शाता है कि मौसम में कितनी तेजी से बदलाव आ रहा है।

पटना के बाढ़ क्षेत्र में भी वज्रपात का असर देखने को मिला, जहां ताड़ के पेड़ पर बिजली गिरने से आग लग गई। हालांकि इस घटना में किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई, लेकिन यह घटना इस बात का संकेत है कि स्थिति कितनी खतरनाक हो सकती है।

मौसम विभाग ने अनुमान जताया है कि 21 मार्च को भी राज्य के अधिकांश हिस्सों में मौसम सक्रिय बना रहेगा। यानी आने वाले कुछ दिन अभी भी सतर्क रहने की जरूरत है। हालांकि 22 मार्च के बाद धीरे-धीरे मौसम में सुधार होने की संभावना जताई गई है।

इस पूरे घटनाक्रम ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि मौसम की अनिश्चितता अब पहले से अधिक बढ़ गई है। अचानक आने वाली आंधी, बारिश और वज्रपात न केवल लोगों के जीवन को खतरे में डालते हैं, बल्कि आर्थिक रूप से भी भारी नुकसान पहुंचाते हैं।

प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि खराब मौसम के दौरान खुले स्थानों पर न जाएं, पेड़ों के नीचे शरण न लें और सुरक्षित स्थानों पर ही रहें। किसानों के लिए भी सलाह दी गई है कि वे मौसम के पूर्वानुमान को ध्यान में रखते हुए अपनी फसलों की सुरक्षा के उपाय करें।

फिलहाल, बिहार में इस प्राकृतिक आपदा के बाद हालात सामान्य करने की कोशिशें जारी हैं, लेकिन जिन परिवारों ने अपने प्रियजनों को खोया है और जिन किसानों की फसलें बर्बाद हुई हैं, उनके लिए यह नुकसान लंबे समय तक दर्द देता रहेगा।

सूरत रंदर वार्ड में टूटी मूर्तियों के विसर्जन को लेकर सहायक पुलिसकर्मी के खिलाफ दुर्व्यवहार और धमकी के आरोप

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। सूरत नगर निगम के पश्चिम जोन (रंदर) के पाल गांव वार्ड कार्यालय में कार्यरत सहायक निरीक्षक देवेन देसाई ने 15/03/2026 को अपने वार्ड कार्यालय में एक टेम्पो मंगवाया और सफाईकर्मियों से पुरानी टूटी मूर्तियां, फ्रेम, धार्मिक तस्वीरें आदि एक बक्से में भरकर किसी समुद्र तट पर ले गए। अतः सहायक निरीक्षक के विरुद्ध उचित कार्रवाई के लिए अखिल भारतीय सफाई कामदार संगठन ने रंदर जोन के लोक स्वास्थ्य निरीक्षक देवेनभाई देसाई के विरुद्ध दुर्व्यवहार, अपने अधिकार का दुरुपयोग, अपने कार्यक्षेत्र से बाहर कार्य करने, सूरत नगर निगम के श्रेणी-4 सफाईकर्मियों को उनकी इच्छा या सहमति के विरुद्ध निषिद्ध कार्य करने के लिए मजबूर करने, धमकी, दबाव या शारीरिक बल का प्रयोग करने और श्रेणी-4 सफाईकर्मियों के जीवन को खतरे में डालने के आरोप में शिकायत दर्ज कराई है। इस अधिकारी को बर्खास्त कर दिया गया है। अनुशासनात्मक कार्रवाई के रूप में अनिवार्य निष्कासन हेतु लिखित शिकायत दर्ज कराई गई है।गरवी गुजरात 2 5

सब-इंस्पेक्टर के काम की तस्वीरें और

वीडियो व्हाट्सएप पर वायरल हो गए हैं। इन्हें देखकर कई गंभीर सवाल उठ रहे हैं। उदाहरण के लिए, तस्वीरों में सफाईकर्मी समुद्र तट पर रखे टाम्पा से बक्से उतारकर नाव पर ले जा रहे हैं। नाव किसी निजी व्यक्ति की लग रही है, जिसे शायद किराए पर लिया गया था। मिली जानकारी के अनुसार, हजीरा सागर में लगभग 5630 टूटी हुई मूर्तियां विसर्जित की गईं। यह अच्छी बात है कि सूरत नगर निगम पुरानी मूर्तियों को इकट्ठा कर रहा है। लेकिन यहां सवाल उठता है कि क्या नगर निगम ने इस तरह के काम के लिए कोई नीति तय की है? क्या सब-इंस्पेक्टर देवेन देसाई ने इस काम के लिए अपने किसी वरिष्ठ अधिकारी से अनुमति ली है? उस समय जब सफाईकर्मी समुद्र में यह काम कर रहे थे, वहां न तो अग्निशमन कर्मी मौजूद थे और न ही कोई सुरक्षा उपाय किए गए थे। अगर समुद्र में कोई दुर्घटना होती है, तो इसके लिए कौन जिम्मेदार होगा? किसी दूसरे के जीवन को खतरे में डालना भारतीय दंड संहिता (आईपीसी, अब बीएनएस) के तहत एक गंभीर अपराध है। इस स्थिति को देखते हुए, सहायक अधिकारी देवेन देसाई ने अपनी वाहवाही बटोरने के लिए यह काम किया है। उनके वरिष्ठ अधिकारियों ने भी ये तस्वीरें और वीडियो देखे होंगे, तो क्या उन्होंने कोई कार्रवाई की? इसलिए, अखिल भारतीय सफाई कामदार संगठन इस घटना की तत्काल और गंभीर जांच की मांग करता है।

इसके अलावा, यह मांग भी की गई है कि जांच में हस्तक्षेप रोकने के लिए एसआई देवेन देसाई को तत्काल सेवामुक्त किया जाए। यदि उनकी मांग के अनुसार कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाले दिनों में सफाई कर्मचारी ऐसा काम नहीं करेंगे, और नगर आयुक्त को लिखित में यह भी मांग की गई है कि सभी विभागों को सूचित किया जाए कि ड्यूटी के दौरान कर्मचारियों के स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाए बिना या उनकी जान जोखिम में डाले बिना कोई काम नहीं किया जाएगा।

एक महिला को ब्रेन-डेड घोषित कर एम्बुलेंस द्वारा पुनर्जीवित किया गया, चमत्कारिक घटना

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। जब हम ऐसी कहानियां सुनते या देखते हैं जो हमें सोचने पर मजबूर कर देती हैं, तो हम आश्चर्यचकित हो जाते हैं और इसे एक दैवीय चमत्कार मानते हैं। ऐसी ही एक कहानी उत्तर प्रदेश के बरेली की है, जहां विनीता शुक्ला नाम की एक महिला मरीज, जिसे अस्पताल में ब्रेन-डेड घोषित कर दिया गया था, को एम्बुलेंस के एक झटके से नया जीवन मिल गया।

घटना का विवरण इस प्रकार है कि 22 फरवरी को विनीताबेन अचानक अपने घर में बेहोश हो गईं। उन्हें तुरंत जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां से उन्हें बरेली के एक बड़े अस्पताल में भर्ती कराने की सलाह दी गई। उन्हें दो दिन तक वेंटिलेटर पर रखा गया और फिर डॉक्टरों ने उन्हें ब्रेन डेड घोषित कर दिया, क्योंकि उनके शरीर में कोई हलचल नहीं थी। डॉक्टर ने कहा कि वेंटिलेटर से हटाते ही उनकी मृत्यु हो जाएगी। इसके बावजूद, परिवार ने उन्हें घर ले जाने का फैसला किया। 24 फरवरी को एक एम्बुलेंस उन्हें घर ले जा रही थी और घर में मातम का माहौल

था। अंतिम संस्कार की तैयारियां पहले ही हो चुकी थीं। हालांकि, घर पहुंचने से पहले, सड़क पर एक गड्ढे के कारण जोरदार झटका लगा। गड्ढे वास्तव में जानलेवा होते हैं, लेकिन इस गड्ढे के झटके से विनीताबेन के शरीर ने फिर से सांस ली। उनके शरीर में हलचल देखकर उन्हें तुरंत पास के एक निजी अस्पताल में ले जाया गया।

निजी अस्पताल के विशेषज्ञों को संदेह हुआ कि मरीज को सांप ने काट लिया होगा, इसलिए उन्होंने उसे विषनाशक इंजेक्शन दिया। लगभग 13 दिनों के इलाज के बाद विनीता शुक्ला अब पूरी तरह से ठीक हो चुकी हैं।

दौसा स्टेशन पर नॉन इंटरलॉकिंग कार्य के कारण ट्रेनों के मार्ग में अस्थायी परिवर्तन

(जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा तथा सुरक्षित एवं आधुनिक रेल संचालन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से उत्तर पश्चिम रेलवे द्वारा दौसा स्टेशन पर नॉन इंटरलॉकिंग कार्य के कारण तथा जयपुर मंडल के जयपुर–बांदीकुई खंड पर इलेक्ट्रोनिक इंटरलॉकिंग कार्य के चलते दिनांक 04 अप्रैल, 2026 को ट्रेन संख्या 12915 साबरमती-दिल्ली आश्रम एक्सप्रेस एवं 20964 वाराणसी-साबरमती एक्सप्रेस ट्रेनों के मार्ग में अस्थायी परिवर्तन किया गया है, जिसका विवरण निम्नानुसार है।

v ट्रेन संख्या 12915 साबरमती–दिल्ली आश्रम एक्सप्रेस अपने निर्धारित मार्ग फुलेरा–जयपुर–अलवर–रेवाड़ी के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया फुलेरा–रींगस–रेवाड़ी होकर चलेगी तथा मार्ग में यह ट्रेन रींगस, नीम का थाना एवं नारनौल स्टेशनों पर रुकेगी।

v ट्रेन संख्या 20964 वाराणसी–साबरमती एक्सप्रेस अपने निर्धारित मार्ग रेवाड़ी–अलवर–जयपुर–फुलेरा के स्थान पर परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी–रींगस–फुलेरा होकर चलेगी तथा मार्ग में यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना एवं रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।

ट्रेनों के ठहराव, समय एवं कोच संरचना की विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

मेहसाणा में ROB निर्माण हेतु ग्राउंड सर्वे, कनेक्टिविटी सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण पहल

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल एवं मेहसाणा महानगरपालिका द्वारा यात्रियों एवं आम नागरिकों की सुविधा तथा सुरक्षित एवं सुगम आवागमन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से मेहसाणा शहर में प्रस्तावित रोड ओवर ब्रिज (ROB) के निर्माण हेतु आज विस्तृत ग्राउंड सर्वेक्षण किया गया।

यह प्रस्तावित ROB ओल्ड विसनगर रोड को ओल्ड पाटन रोड से जोड़ेगा तथा अहमदाबाद–पालनपुर हाईवे से पुलिस मुख्यालय तक सीधी एवं बेहतर कनेक्टिविटी स्थापित करेगा। प्रस्तावित

संरचना की कुल लंबाई (ब्रिज एवं अप्रोच सहित) लगभग 1050 मीटर होगी, जिसमें 76 मीटर का गर्डर स्पैन तथा 12 मीटर चौड़ाई का प्रावधान किया गया है।

उल्लेखनीय है कि मेहसाणा क्षेत्र में रेलवे लाइन के मीटर गेज से ब्रॉड गेज में रूपांतरण के उपरांत शहर दो भागों में विभाजित हो गया था, जिसके कारण स्थानीय नागरिकों को आवागमन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इस समस्या के स्थायी समाधान के रूप में ROB निर्माण की योजना तैयार की गई है। आज आयोजित सर्वेक्षण के दौरान मेहसाणा लोकसभा सांसद श्री हरी भाई पटेल, राज्यसभा सांसद श्री मयंक भाई नायक, अहमदाबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश, जिला विकास अधिकारी श्रीमती डॉ. हसरत जैस्मीन सहित वरिष्ठ वाणिज्य प्रबंधक श्री अन्नू त्यागी तथा रेलवे एवं प्रशासन के अन्य अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों द्वारा स्थल का निरीक्षण किया गया तथा परियोजना के तकनीकी एवं व्यावहारिक पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की गई।

सभी संबंधित अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों ने संयुक्त रूप से संभावित ROB स्थल का निरीक्षण कर आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। इस परियोजना के पूर्ण होने पर शहर के दोनों भागों के बीच सीधी, सुरक्षित एवं निर्बाध कनेक्टिविटी सुनिश्चित होगी, जिससे यातायात में सुगमता, समय की बचत तथा स्थानीय व्यापार एवं जनजीवन को नई गति मिलेगी। पश्चिम रेलवे द्वारा इस परियोजना के क्रियान्वयन हेतु आवश्यक तकनीकी एवं प्रशासनिक कार्यवाही को शीघ्र गति से आगे बढ़ाया जाएगा।